चैतन्य लहरी

हिन्दी आवृत्ति

खण्ड : V, अंक : 8

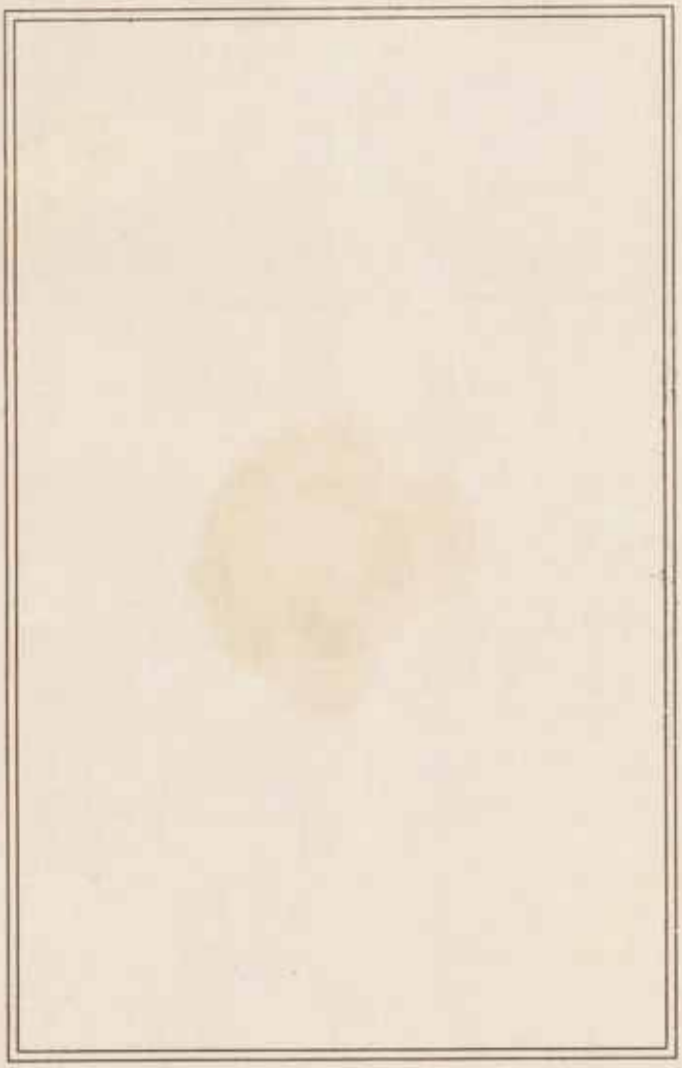

"गहराई को छूने के लिये तपस्विता आवश्यक है। ..... तप का मतलब ये नहीं कि बैठ कर आप उपवास करें। चित्त निरोध, चित्त–अवलोकन और चित्त का विचार ही तपस्या है। चित्त निरोध का अर्थ चित्त के साथ जबरदस्ती नहीं। आत्मा के प्रकाश में अपने चित्त को देखने से आपका चित्त आलोकित हो जाता है।"

– माता जी श्री निर्मला देवी

चैतन्य लहरी

खण्ड : V, अंक : 8

विषय सूची

	पृष्ठ
(1) अन्तर्दर्शन	3
(2) पल्लाज अथेना पूजा	9
(3) ईस्टर पूजा	12
(4) मृत सागर से प्रलेख	16
(5) जन कार्यक्रम, दिल्ली–22.3.93	18
(6) श्री माता जी द्वारा नियुक्त की गई समितियां	23

सम्पादक : श्री योगी महाजन
मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री विजय नाल गिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली–110067

मुद्रित : भारती प्रिन्टर्स, WZ-113,
शकूरपुर गाँव, दिल्ली–110034
फोन : 5413126, 5437741

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

शुडी कैम्प–इंग्लैण्ड (6–8–1988)

अन्तर्दर्शन

इस वर्ष, मैं सोचती हूं, हम इंग्लैण्ड में कोई सार्वजनिक कार्यक्रम नहीं करेंगे, क्योंकि वहां के हालात भी कुछ ऐसे ही हैं। जब भी कभी हालात हमारे कार्यक्रम में परिवर्तन लायें तो हमें तुरन्त समझ जाना चाहिए कि इस परिवर्तन का कोई लक्ष्य है। और खुले–दिल से हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिये। परमात्मा चाहता है कि हम परिवर्तित हों। मान लो मैं सड़क पर जा रही हूं और लोग कहें कि मां आप रास्ता भूल गई हैं तो यह ठीक नहीं है। मैं कभी भटकती नहीं क्योंकि मैं सदा स्वयं के साथ होती हूं। परन्तु मेरे उधर से जाने का कारण यह है कि मैने उधर से जाना था। मैने ऐसा करना था। इसी कारण मैं रास्ता भूल गई थी। यदि आप में ऐसी सूझबूझ है और आपके हृदय में ऐसा संतोष है तब आपको लगेगा कि जीवन को जितना आप सोचते थे उससे कहीं अधिक है।

अब हमने इस वर्ष सार्वजनिक कार्यक्रम करने का निर्णय किया था फिर भी हम कर न सके। तो मैने सोचा कि इसका कारण क्या है। इसका कारण यह है कि हमें अपने आत्म साक्षात्कार को दृढ़ करना है। एक वृक्ष को जो कि जीवन्त वृक्ष है विकसित होते हुए किसी दिशा विशेष में एक सीमा तक जाना होता है जहां पर उसे दिशा परिवर्तन करना पड़ता है। हो सकता है उधर सूर्य न आता हो या पानी का स्तर नीचा हो जिसके कारण उसे दिशा परिवर्तन करना पड़े। इसी प्रकार हमें समझना चाहिए कि हम परमात्मा के हाथों में हैं। यदि कोई योजना परिवर्तित होती है तो यह हमारी ओर प्रतिबिम्बित करती है। अतः हमें इसका कारण देखना है और इसका कारण यह है कि हमें स्वयं को दृढ़ करना है।

सहजयोग को दृढ़ करना आवश्यक है। अपने को दृढ़ करने के लिये पहला कार्य है अन्तर्दर्शन। अन्तर्दर्शन आपके लिये अत्यन्त आवश्यक है। प्रकाश को अन्तस में प्रतिबिम्बित करके स्वयं देखना ही अन्तर्दर्शन है। सहजयोग में आपने अभी तक क्या किया? आप कहां हैं? किस सीमा तक आप गये हैं? और आपको कहां तक जाना है? आपमें क्या कमी है? स्वयं को उचित सिद्ध करने का प्रयत्न किए बिना, भूतों, बाधाओं या किसी अन्य व्यक्ति को दोष दिए बिना जब आप स्वयं को देखने लगेंगे तो आप आश्चर्यचकित रह जाएंगे। जब आप यह देखने लगेंगे कि किस दोष के कारण मैं स्वयं को दृढ़ नहीं कर पाया तो, आपको हैरानी होगी, कि अभी तक बहुत सी समस्याएं शेष हैं जिनका ठीक होना आवश्यक है। इन समस्याओं को हम बहुत स्पष्ट देख सकते हैं। आत्मा के प्रकाश में हम स्पष्ट देख सकते हैं कि हममें क्या दोष आ गए हैं। मैने एक अत्यन्त रोचक चीज देखी है कि एक प्रकार की माया के साथ सहजयोग हर समय कार्यरत है। और 'अज्ञान' ही यह माया है, कभी आंशिक अज्ञान और कभी पूर्ण अज्ञान। सहजयोग में आकर आप आशीर्वादित हो जाते हैं। आप पर कृपा हो जाती है। आपके परिवार पर भी कृपा हो सकती है। आपके बच्चों पर कृपा हो सकती है। आपका शरीर स्वस्थ हो जाता है। आर्थिक रुप में भी, आपको नौकरी मिल जाती है, धन मिल जाता है। आपको विशेष उपलब्धियां हो जाती हैं जो चमत्कारिक होती हैं। अब हमें ये वरदान प्राप्त हो गए हैं, अब हमें कुछ और करने की आवश्यकता नहीं, जो कुछ भी हमने अब तक किया था उसका पर्याप्त फल हमें मिल गया है, ये सब सोचते हुए लोग उन्हीं उपलब्धियों में खो जाते हैं तथा भटकने लगते हैं। परन्तु वास्तविकता यह नहीं है। यह तो आपको मात्र एक आश्रय प्रदान किया गया है जिससे सहजयोग में आपकी श्रद्धा पूर्णतया स्थापित हो सके। विशेषतया आप मुझे पहचान सकें कि मैं हूं कौन। परन्तु अब भी यदि आप भटकते ही चले गए तो आपको मिले वरदान अभिशाप भी बन सकते हैं और हो सकता है कि आपको लगे कि यह कैसा प्रकोप हम पर पड़ गया है तथा यह कि ये वरदान क्यों अभिशाप बन गये हैं।

कुछ लोगों को यह आशीर्वाद पहचानने में समय लगता है। उदाहरणार्थ, आधुनिक विचारों के अनुसार हम सोचते हैं कि बहुत सा धन पा लेना ही सबसे बड़ा वरदान है। बहुत से लोगों को धन भी मिल जाता है। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। आंतरिक शांति, साक्षी–अवस्था प्राप्त करने के लिये, अपनी चैतन्य लहरियों को भली–भांति महसूस करने के लिये तथा हर समय मध्य में बने रहने के लिये उत्थान ही वास्तविक वरदान है। क्योंकि इसी के अन्दर आप शेष सब पा लेते हैं। पूर्णत्व तभी सम्भव है जब आपके अन्दर पूर्ण आनन्द हिलौरें ले रहा है। आखिरकार सभी कुछ आनन्दप्रिय तथा आनन्त को महसूस करने के लिये ही तो है। यह अन्त नहीं है। यदि ऐसा होता तो धनवान, स्वस्थ तथा सफल व्यक्ति ही प्रसन्न तथा शांत होते। परन्तु ऐसा नहीं है। वे बहुत दुःख उठा रहे हैं। एक प्रकार से, दिन प्रतिदिन अपना नाश कर रहे हैं क्योंकि उन्हें अपने जीवन से घृणा है। जीवन को वे सहन नहीं कर सकते। सदा उदास रहने का कारण उन्हें समझ नहीं आता।

अतः ये सब वरदान, ये परिवर्तन जो आपको प्राप्त होते हैं, नये क्षेत्र जो आपके लिये खुलते हैं ये आपके हित के लिये हैं और केवल उत्थान में ही आपका हित है। शेष सभी कुछ व्यर्थ है। एक बार जब आप समझ जायेंगे कि जीवन में आपने यही पाना है और इसी का आनन्द लेना है तो कार्य हो जाएगा।

परन्तु सहजयोग में करुणा तथा प्रेम ही महत्पूर्ण है। इसमें अधिक बन्धन नहीं हैं। अपने विकास के लिये आप स्वतंत्र हैं। आपकी आत्मा ही आपका मार्गदर्शन करती है। हर समय कोई न तो आपको विवश करेगा और न आपकी गलतियां निकालेगा। आपको ही स्वयं को देखना है, समझना है तथा इसे पाना है।

एक मापदंड यह होना चाहिए कि मैने सहजयोग के लिये क्या किया है? मैने श्री माता जी के लिये क्या किया है? ये दोनों बाते समझना अत्यन्त आवश्यक हैं। सहजयोग के लिये किया गया छोटे से छोटा कार्य भी महत्वपूर्ण है। यदि आप में विवेक है तो आप समझ सकते हैं कि परमात्मा के लिये कार्य करना ही महानतम कार्य है। यही सबसे महत्वपूर्ण तथा सर्वोच्च उद्यम है जिसके करने का अवसर मानव को प्राप्त हुआ है। कितना महान अवसर है। आप कह सकते हैं कि श्री माता जी हम मध्यम दर्जे के हैं, किसी काम के नहीं–परन्तु आपको चुना गया है। अतः आपमें कुछ विशेषता तो होगी ही। आपने अपना वह गुण नहीं देखा होगा जो परमात्मा के इस महान कार्य को करेगा। अतः आपको पता लगाना है कि "मुझे सहजयोग के लिये क्यों चुना गया है?" में सहजयोग में क्या कर सकता हूं? आपको सदा याद रखना है कि मुझे सहजयोग के लिये चुना गया है। मैं सहजयोग का पूरा लाभ उठाना चाहता हूं। किसी के पास यदि धन नहीं है तो वह आशा करता है कि सहजयोग उसे धन दे, नौकरी बच्चे, स्वास्थ्य आदि सभी कुछ दे। आशाएं तो ठीक हैं। पर आपने सहजयोग के लिये क्या किया? अन्तर्दर्शन का यह दूसरा विषय है।

यह देखना कि हमें सहजयोग के लिये कुछ कार्य करना है, अति महत्वपूर्ण है। धन, कार्य, विचार तथा किसी प्रकार की सहायता महत्वपूर्ण नहीं। हमने कितने लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया है? यह महत्वपूर्ण बात है। आपको हिसाब रखना है कि कितने लोगों को आपने आत्म साक्षात्कार दिया तथा कितने लोगों से सहजयोग के विषय में बातचीत की। आप सोच सकते हैं कि आपने कुछ लोगों को आत्म साक्षात्कार दिया। वे आते हैं और फिर गायब हो जाते हैं। कोई बात नहीं। आखिरकार वे आपके पास आएंगे। आज आप कुछ लोगों पर आजमाइए। वे गायब हो जायेंगे। पर कल फिर लौट आएंगे। निरन्तर आपको इसके लिये कार्य करना होगा।

आप जानते हैं कि मैं इंग्लैंड में बहुत परिश्रम करती हूं। मेरा इंग्लैण्ड आना पूर्व निश्चित था। हृदय को और अच्छी तरह कार्य योग्य बनाने के लिये मेरा यहां आना आवश्यक था। परन्तु हृदय अकर्मण्य है। आप जानते हैं। और अकर्मण्य हृदय को सभी प्रकार की समस्याएं हो सकती हैं। पर इन सारे वर्षों में मैं कार्य करती रही हूं। हर वर्ष जो समय मैं दे सकी वह मैने सहजयोगियों, उनकी समस्याओं तथा सहजयोग के लिये दिया। उनकी छोटी–छोटी समस्याओं को दूर करने का प्रयत्न किया। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप में आप सब आशीर्वादित हुए। आप लोग, जो योगी हैं, अब भी आपकी क्या अवस्था है? आप सन्त हैं। मेरे पास एक फोटो है जिसे आप सब देखें–इसमें आप सब प्रमाणित सन्त हैं। (योगी हंसते हैं) क्या आपने वह फोटो देखा है? अभी तक नहीं? आप सब परमात्मा द्वारा प्रमाणित सन्त हैं, किसी पादरी या पोप द्वारा प्रमाणित नहीं। पोप द्वारा प्रमाणित किया जाना नकली होता है। परन्तु यह तो बहुत बड़ी बात है। आप लोगों को तो सर्वशक्तिमान परमात्मा ने प्रमाण दिया है। पर अभी तक आप अपने कार्यों में व्यस्त हैं, अपनी छोटी–छोटी चीजों में व्यस्त हैं। आप अभी तक अपने तुच्छ जीवन तथा परिवारों में व्यस्त हैं। उदार चरित्राणां वसुधाएव कुटुम्बकम् उदार चरित्र व्यक्तियों के लिये पूरा विश्व ही उनका परिवार होता है। क्या अभी तक आप अपने ही परिवार के बारे में चिंतित हैं? तो अभी तक आप अपने साधुत्व को नहीं समझ सके। संत कभी अपनी पत्नी, अपने बच्चे, अपने घर के विषय में चिंतित नहीं होता, वह पूरे विश्व की चिंता करता है।

सहजयोगी होने के नाते अब आप शक्तिशाली हस्तियां हैं। आप बहुत शक्तिशाली लोग हैं। पूरे विश्व में समस्याएं हैं आप अच्छी तरह जानते हैं। आपका बुद्धिवादी या राजनीतिज्ञ होना आवश्यक नहीं। परन्तु विश्व को परेशान करने वाली समस्याओं का ज्ञान आपको होना आवश्यक है। संत होने की अपनी मस्ती में आपको नहीं खो जाना है। ऐसा नहीं होना चाहिए। आपको समझना है कि आपने इसी विश्व में रहना है। विश्व की सारी समस्याओं को आपने जानना है। केवल अपनी समस्याओं की ही नहीं, पूरे विश्व की समस्याओं की चिंता आपने करनी है। आपको विचारना है कि विश्व में क्या हो रहा है और विश्व की क्या समस्याएं हैं? यह आपकी जिम्मेदारी है।

मात्र इतना ही नहीं, आपको प्रार्थना करनी है कि श्री माता जी इस समस्या का समाधान कीजिए। व्यक्तिगत तथा सामूहिक रुप से आपको अपना चित्त स्वयं से और अपने क्षुद्र जीवन से हटा कर इस विशाल लक्ष्य की ओर लाना है। तब आप संत हैं। आपका कर्तव्य है कि इन समस्याओं के समाधान के लिये परमात्मा की सहायता मांगें। इसी कार्य के लिये आपको चुना गया है। आपकी इच्छा पूर्ण होगी। आप जानते हैं कि मैं तो इच्छा विहीन हूं। आप ही को यह इच्छा करनी है। जो भी इच्छा आप करेंगे वह पूर्ण होगी। माँ की सुरक्षा, प्रेम तथा करुणा आपके साथ है। परन्तु आपको इस विश्व की चिंता करनी होगी। सीमित क्षेत्र में, सीमित ढंग से नहीं जीना होगा। अब जैसे इंग्लैण्ड के लोग सोचते

हैं कि उनकी समस्याएं बरतानिया तक ही सीमित हैं। नहीं, जहां तक सहजयोग है वहां तक आपकी समस्याएं हैं। और आपको उन सब की चिंता करनी होगी। आस्ट्रेलिया में भी वैसी ही समस्याएं हैं। कोई व्यक्ति कष्टदायी है। आपको चाहिये कि जूता–पिटाई करके उस व्यक्ति को ठीक कर दें। अगुआ ने बताना है कि किस की जूता–पिटाई करनी है। आस्ट्रेलिया में हो, अमेरिका में या भारत में, मैं सब ठीक करुंगी।

जहां कहीं भी आप सहजयोग पर कोई समस्या या आक्रमण देखें तो सामूहिक रुप से इस पर चित्त डाल कर इसे ठीक करें। फिर कुछ सामान्य समस्याएं हैं। जैसे हम देख रहे हैं कि अमेरिका मूर्खता कर रहा है। आपको अमेरिका पर चित्त डालना है। आपको अपने चित्त का विस्तार बाहर की ओर करना होगा, अन्दर की ओर नहीं। केवल अपनी, अपने परिवार, घर तथा बच्चों की ही चिंता नहीं करनी। बाहर की ओर चित्त विस्तृत करते ही आपकी व्यक्तिगत समस्याएं सुलझ जाती हैं। आपको बाहर चित्त डालना है।

आजकल दूरदर्शन है। पहले हमने कहा कि दूरदर्शन मत देखिए–क्योंकि सहजयोगियों को इसका कोई लाभ न था। दूरदर्शन देखने से वे पकड़े जाते थे। परन्तु अब महत्वपूर्ण घटनाएं घटित हो रही हैं जिन्हें आप स्वयं देख सकते हैं। विश्व की समस्याओं का आप अंदाजा लगा सकते हैं और निर्णय कर सकते हैं कि कहां आपने चित्त डालना है।

एक बार आप अपने व्यक्तित्व को समझ लें। व्यक्तित्व एक सीमित क्षेत्र में लिप्त नहीं हो सकता। आपका व्यक्तित्व पूरे ब्रह्मांड की समस्याओं में लिप्त हो जाना चाहिए। आप आश्चर्यचकित होंगे कि सामूहिक रुप से सभी कुछ हो सकता है।

इस स्थिति में आप कहां हैं, आप स्वयं यह देख सकते हैं। सभी सहजयोगियों के सहस्रार पर चैतन्य लहरियां हैं। क्या आप सब देखना चाहेंगे ? आओ देखें। इस फोटो में मेरे सामने बैठें आप सभी लोगों के सिर पर लहरियां हैं। अतः अपनी लहरियों को फैलायें। अपने चित्त को फैलाएं। आप हैरान होंगे कि आपकी सभी तुच्छ समस्याएं समाप्त हो जायेंगी। आप सब यह फोटो देखें।

अतः हमें अपनी गरिमा, अपनी पदवी के प्रति चेतन होना है। जानना है कि हम संत हैं और एक सर्वोच्च अवस्था पर पहुंच गए हैं। अब हम प्रकाश बन गए हैं और दूसरे लोगों को भी यह प्रकाश देना है। बाइबल में ईसा ने कहा है कि प्रकाश को मेज के नीचे न रखें। दीपक को थड़े पर रखें। अन्य लोगों तक प्रकाश पहुंचाने के लिये अपने प्रकाश को सर्वोच्च स्थान पर रखें। यह दोतरफा कार्य कर रहा है बशर्ते कि आप यह समझना आरंभ कर दें कि आप क्या हैं, आप को किस बात का ज्ञान होना चाहिए, आपकी अवस्था क्या है, आपकी शक्तियां क्या हैं, आपने सहजयोग में क्या प्राप्त किया है, आप पर सहजयोग का क्या ऋण है, और आपने सहजयोग के लिये क्या देना है तथा किस प्रकार सहजयोग ने आपको योग्य तथा भला बनाया है। क्या आप पूर्णतया धर्मपरायण हैं ? क्या आपका आचरण उचित है ? क्या आप सभी आवश्यक अच्छे कार्य कर रहे हैं ? केवल आप ही लोग यह सब कर सकते हैं। आप में विशेष शक्तियां हैं तथा आध्यात्मिक जीवन से आपके विशेष सम्बन्ध हैं। यदि आप अन्य सांसारिक मूर्ख लोगों की तरह स्वयं को परिवार, बच्चों, मूर्खतापूर्ण पूर्व–जीवन तक ही सीमित कर देंगे तो आप अपने तथा दूसरों के प्रति भटक जायेंगे। जितना आप जानते हैं, समस्याएं उससे कहीं अधिक हैं। आपको समझ लेना है कि श्री माता जी ने हमें योगी बनाया है। हम संत हैं और हमें विश्व का मार्गदर्शन करना है। उन्होंने हमें बताया है कि हम प्रकाश हैं और हमें लोगों का पथ–प्रदर्शन करना है और बताना है कि वे किस प्रकार आगे बढ़ें। हर व्यक्ति समस्याओं में फंसा हुआ लगता है, एक छोटे से भंवर में फंस कर गोल घूमता हुआ। यह कैसे हो सकता है। मैने आपको बहुत बार कहा है कि इन झूठे गुरूओं को देखें। इनमें चैतन्य नहीं है। वे कुण्डलिनी तथा सहजयोग के बारे में कुछ नहीं जानते। फिर भी वे इतना कुछ कर रहे हैं। और हम क्या कर रहे हैं ? हम अभी तक स्वयं से, अपनी समस्याओं से, अपने विचारों, अपनी तुच्छ बुद्धि तथा संकीर्ण–हृदयता से संघर्ष कर रहे हैं।

यह समझना आप पर निर्भर है। अपने बारे में आपने स्वयं निर्णय करना है। अपनी इच्छा, बड़प्पन और उदारता को बढ़ावा देना है। आपने स्वयं देखना है कि आप किस योग्य हैं और क्या कर सकते हैं। यह कहना बहुत सरल है कि मां यह कार्य बहुत दुष्कर है। मैं कुछ नहीं कर सकता। कुछ लोग कह सकते हैं कि श्री माता जी, मैं अपने परिवार तथा बच्चों में व्यस्त हूं। क्या आप इसीलिये सहजयोग में आए हैं ? क्या यही कहने के लिये आपको ये सब वरदान मिले हैं ?

अतः दृढ़ीकरण करना आपके लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आप इसे स्पष्ट देख सकते हैं। और इसी कारण इंग्लैण्ड में कोई जन–कार्यक्रम न कर सके क्योंकि वास्तव में हमें सहजयोग में स्थिर होना आवश्यक है। यद्यपि मैं इंग्लैण्ड में बहुत वर्ष रही हूं फिर भी यहां लोग मेरी अधिक परवाह नहीं करते। क्योंकि मैं यहां रहती हूं। वे सोचते हैं कि हम हवाई–अड्डे पर चले जाएं। बस। हमने सभी कठिनाइयां झेल ली हैं, हमने हज कर लिया है। क्या आप हवाई–अड्डे गये थे ? क्या आप श्री माता जी से मिले ? बस हो गया। मुझे मिलने का लाभ क्या है ? मैने आपको क्या दिया है ? क्या आपका प्रकाश फैल रहा है ? कितने लोगों ने आपसे साक्षात्कार पाया है ? पता लगाइए कि कितने लोगों ने आपके जीवन, विवेकशीलता तथा आपके आचरण से सहजयोग सीखा है ? यह तरीका है। यह मापदंड है। यह नहीं कि ठीक है मैने श्री माता जी को यात्रा खर्च भेजा है ? भारत में मेरी आयु की स्त्रियां छड़ी के सहारे चलती हैं। एक सीढ़ी वे नहीं

चढ़ पातीं। भारत की गर्म जलवायु के कारण। परन्तु मैं यात्रा कर रही हूं। आप जानते हैं कि कितनी यात्रा करती हूं और कितना काम करती हूं। अपने परिवार को मैं अपनी संगति से वंचित करती हूं। परिवार का हर सदस्य इस कमी को महसूस करता है। पर मैं यात्रा करती रहती हूं, करती रहती हूं। आप सब अच्छी तरह जानते हैं कि मैं कितना घोर परिश्रम करती हूं। कभी मैं प्रातः दो बजे सोती हूं और कभी तीन बजे। इस बार हर्ष मेरे साथ था। मैंने उसे देखा। वह निढाल हो गया। आप एक छोटी दौड़ दौड़ते हैं पर मैं (मैराथन) लम्बी–दौड़ दौड़ रही हूं। जिस देश में मैं होती हूं केवल वहीं के सहजयोगी कार्य करते हैं और मेरे जाते ही आराम से बैठ जाते हैं। पर मैं तो ऐसा नहीं करती।

आपको भी मेरी तरह सोचना चाहिए। मैं जो कुछ भी करती हूं उससे मुझे क्या लाभ है? मैं आपके लिये कार्य करती हूं। मैं अपने बच्चों को सामान्य अवस्था में ले आई हूं। उन्हें परमात्मा के साम्राज्य में पहुंचा दिया है। आपको भी ऐसा ही करना है। आपको अन्य लोगों को परमात्मा के साम्राज्य में ले जाना है। परन्तु यदि आप अपनी ही दलदल में फंसे रहे तो दिनों–दिन आपका पतन होगा। यदि आपने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया तो आप जहां हैं वहीं भटक जाएंगे। इंग्लैंड के लोग अत्यन्त बुद्धिमान हैं। अमेरिका के लोगों की तरह आप मूर्ख नहीं हैं। एक समय था जब आपकी बुद्धिमत्ता चालाकी बन गई थी। पर अब आप इस चालाकी से परेशान हो चुके हैं। भारतीयों ने आपसे चालाकी सीख ली है। परन्तु चालाकी से थककर आप लोग आलसी हो गए हैं। फिर भी अपनी बुद्धि से आप समझ सकते हैं कि श्री माता जी कितना महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं।

आपका कहा हुआ हर शब्द और आपका हर आचरण इतिहास बन जायेगा। जो भी कुछ आप सहजयोग के लिये करेंगे वह इतिहास में लिखा जायेगा। आपका हर कार्य, सहजयोग में आपकी हर उपलब्धि। दिखावा या डींग मारना नहीं मात्र आपकी उपलब्धियों को ही लिखा जाएगा। परमात्मा पाखण्ड को समझते हैं। वे जानते हैं कि आपकी स्थिति क्या है और आपका लक्ष्य क्या है। आप परमात्मा को बेवकूफ नहीं बना सकते। परमात्मा को बेवकूफ बनाते समय याद रखें कि आप स्वयं को, अपनी आत्मा को, अपने आत्म साक्षात्कार को और अपने उत्थान को बेवकूफ बना रहे हैं। अतः हमें सावधान रहना है।

मां होने के नाते मैं कहूंगी कि बड़ी सावधानी पूर्वक अन्तर्दर्शन कीजिए। आपने सहजयोग के लिये क्या किया? अन्य सहजयोगियों के लिये क्या किया? भटकते हुए अन्य लोगों के लिये क्या किया? अन्य सहजयोगियों के साथ हमारा आचरण कैसा है? कितनी शांति, प्रेम एवं करुणा, हमने अन्य लोगों को दी है? हमने दूसरों को कितनी सूझबूझ तथा सहनशीलता दिखाई है? किसी के पास यदि थोड़ा सा अधिक धन आ जाता है तो वह तूफान बन जाता है। वह इतना आक्रामक तथा अशिष्ट हो जाता है कि मैं विश्वास ही नहीं कर पाती। धन किस प्रकार आपको इन बुराइयों की गर्त में धकेल सकता है? आप साधारण व्यक्ति नहीं, आप ही वे सन्त हैं जिनके चरण गंगा नदी ने धोये थे। अपनी गरिमा को समझने का प्रयत्न कीजिए। अपनी शक्तियों, अपने संत पद को समझने का प्रयत्न कीजिए। आप सहजयोगी सब संतों से उच्च हैं क्योंकि आप ही आत्म साक्षात्कार देना जानते हैं। कुण्डलिनी के विषय में आप सब कुछ जानते हैं। आत्म साक्षात्कार के बारे में आप सब कुछ जानते हैं। कितने लोगों को इसका ज्ञान था? नहीं तो मुझे ऐसा लगता है मानो मैंने यह ज्ञान मूर्ख समूह को दे दिया है जो इसका मूल्य नहीं जानते। ईसा ने कहा है 'सूअरों के सामने मोती मत डालिए।' मेरे विचार में मैंने यह गलती नहीं की। निश्चय ही मैंने ऐसा नहीं किया। पर यह निर्णय करना आप पर निर्भर करता है कि आप कहां खड़े हैं और किस श्रेणी में।

स्पष्ट है कि कितने भयानक समय से हम गुजर रहे हैं। इससे मुकाबला करना आवश्यक है। अब तक लड़े गए युद्धों से यह कार्य कहीं कठिन है। मानव द्वारा किए गए सभी संघर्षों से यह कहीं कठिन है। एक भयानक विश्व की सृष्टि हो चुकी है और हमने इसे परिवर्तित करना है। यह अति कठिन कार्य है। इसके लिये आपको अत्यन्त सच्चाई से कार्य करना होगा। मुझे विश्वास है कि एक दिन विश्व के इतिहास में सहजयोगियों का नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा। मुझे विश्वास है कि यह घटित होगा। इसे घटित होना होगा। एक मस्तिष्क तथा हृदय से, सामुहिक रूप में आपने यह प्राप्त करना है। मैं क्या बलिदान करुं? मुझे क्या करना चाहिए? किस प्रकार मुझे सहायता करनी चाहिए? मेरा क्या योगदान है? काश कि मैं अपने जीवनकाल में वे दिन देख पाती। अतः आज हमें अन्तर्दर्शन करना है।

तो क्या हम ध्यान करें? कृपया आप सब अपनी आंखें बंद कर लीजिये। जैसे हम जन कार्य–क्रम में करते हैं वैसे ही ध्यान करेंगे। अपना बायां हाथ मेरी ओर करके शरीर के बायें भाग में आप सब कार्य करेंगे। सर्वप्रथम अपने हृदय पर दायां हाथ रखना है। हृदय में शिव का निवास है, आत्मा का स्थान है। अतः आपने अपनी आत्मा का धन्यवाद करना है कि इसने आपके चित्त को प्रकाशमय किया है। क्योंकि आप संत हैं अतः जो प्रकाश आपके हृदय में हुआ है उससे आपने पूरे विश्व को ज्योतिर्मय करना है। अतः कृपया अपने हृदय में प्रार्थना कीजिए कि :

श्री माता जी
परमात्मा के प्रति मेरे प्रेम का यह प्रकाश पूरे विश्व में फैले।

अपने प्रति पूर्ण सच्चाई तथा समझदारी रखते हुए कि आप

परमात्मा से जुड़े हुए हैं और पूर्ण आत्मविश्वास से आप जो इच्छा करेंगे वह पूरी होगी।

अब अपना दायां हाथ अपने पेट के ऊपरी हिस्से पर, बाई ओर रखें। यह आपके धर्म का केन्द्र है। यहां आपको प्रार्थना करनी है कि :–

श्री माता जी

विश्व निर्मला धर्म पूरे विश्व में फैले।

हमारे धार्मिक जीवन तथा धर्मपरायणता लोगों को प्रकाश दिखाएं।

अपनी धर्मपरायणता लोगों को देखने दें ताकि वे विश्व निर्मला धर्म स्वीकार करें जिसके द्वारा उन्हें ज्ञान, हितैषिता, उच्च जीवन तथा उत्थान की इच्छा प्राप्त होती है।

अब अपना बायां हाथ अपने पेट के निचले हिस्से पर, बाई ओर रखें। इसे थोड़ा सा दबायें। यह आपकी शुद्ध विद्या का केन्द्र है। सहजयोगी होने के नाते यहां पर आप कहें कि :–

परमात्मा की कार्यप्रणाली का पूर्ण ज्ञान हमें हमारी श्री माता जी ने प्रदान किया है। हमारी सूझबूझ तथा सहनशक्ति के अनुसार श्री माता जी ने हमें सारे मंत्र तथा शुद्ध विद्या दी है। हम सब को इसका पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

मैने देखा है कि यदि पति अगुआ है तो पत्नी को सहजयोग का एक शब्द भी नहीं आता। यदि पत्नी को सहजयोग का ज्ञान है तो पति इसके बारे में कुछ नहीं जानता। प्रार्थना कीजिए कि––

श्री माता जी

मुझे इस ज्ञान में निपुण कीजिए ताकि मैं लोगों को आत्म साक्षात्कार दे सकूं, तथा उन्हें दैवी–कानून कुण्डलिनी तथा चक्रों के विषय में समझा सकूं। श्री माता जी कृपा कीजिये कि मेरा चित्त सांसारिक वस्तुओं की अपेक्षा सहजयोग में अधिक हो।

अब दायां हाथ पेट के ऊपरी हिस्से में, बाई ओर रखें। आंखें बंद रखें। पेट को हाथ से थोड़ा सा दबा कर रखें। यहां पर कहें कि श्री माता जी ने मुझे आत्मा प्रदान की है जो कि मेरी गुरू हैं। पूर्ण हृदय से कहें ––

श्री माता जी

मैं स्वयं का गुरू हूं। मुझमें असंयम न हो, मेरे चरित्र में गरिमा और आचरण में उदारता हो। अन्य सहजयोगियों के लिये मुझमें करुणा तथा प्रेम हो। श्री माता जी मुझ में बनावटीपन न हो। परमात्मा के प्रेम तथा उसके कार्यों का गहन ज्ञान मुझे हो ताकि जब लेग मेरे पास आयें तो मैं उन्हें प्रेम तथा नम्रतापूर्वक सहजयोग के विषय में बता सकूं और यह महान ज्ञान उन्हें दे सकूं।

अब अपना दायां हाथ अपने हृदय पर रखें। यहां पूर्ण हृदय स कहें :–

श्री माता जी

आनन्द तथा क्षमा के सागर का अनुभव आपने हमें प्रदान किया। अपनी ही तरह अथाह क्षमाशीलता आप ने हमें दी। श्री माता जी आपको कोटि–कोटि प्रणाम। कृपा करके मेरे हृदय को इतना विशाल कीजिए कि पूरा ब्रह्माण्ड इसमें समा जाये। मेरा प्रेम आपके नाम का गुंजन करे। मेरा हर श्वांस आपके प्रेम की सुन्दरता की अभिव्यक्ति करे।

अब आप अपना दायां हाथ बाई विशुद्धि की ओर से ले जाकर गर्दन के मध्य में पीछे की ओर मध्य विशुद्धि चक्र पर रखें। पूर्ण विश्वास के साथ कहें :–

मैं कपट तथा दोष से लिप्त नहीं हूंगा। अपने दोषों को मैं छिपाऊंगा नहीं, उनका सामना करके उनसे मुक्त हूंगा। मैं दूसरों के दोष नहीं ढूंढूंगा। अपने सहजयोग के ज्ञान द्वारा उन्हें दोषमुक्त करुंगा। (हमारे पास चुपके–चुपके दूसरों के दोष दूर करने के बहुत से तरीके हैं) श्री माता जी मेरी सामुहिकता को इतना महान बनाइये कि पूर्ण सहजयोग जाति मेरा परिवार, मेरे बच्चे, मेरा घर तथा मेरा सर्वस्व बन जाएं। क्योंकि हम सबकी एक ही मां है अत मुझमें पूरी तरह तथा अर्न्तजात रुप से यह भाव जागृत हो जाए कि मैं पूर्ण का ही अंग प्रत्यंग हूं, मुझे पूरे विश्व की समस्याओं को जानने की तथा अपनी शुद्ध इच्छा तथा शक्ति से उनका

समाधान करने की चिंता हो। श्री माता जी कृपा करके अपने हृदय में, अन्तर्जात रुप से पूरे विश्व की समस्याओं को जानने तथा उनके कारणों को जड़ से समाप्त करने की भावना मुझे प्रदान कीजिए। मुझे इन समस्याओं के मूल तक पहुंचाइये ताकि मैं अपनी सहजयोग तथा सन्त सुलभ शक्तियों द्वारा इन्हें दूर करने का प्रयास करुं।

अब अपने बायें हाथ से आप अपने कपाल को पकड़िये। यहां आपको यह कहना होगा कि :

श्री माता जी

मैं उन सब लोगों को क्षमा करता हूं जो सहजयोग में नहीं आये हैं, जो अभी परिधि–रेखा पर हैं, जो आते हैं और जाते हैं, जो कभी सहज–सागर के अन्दर कूदते हैं और कभी इससे बाहर।

परन्तु सर्वप्रथम मैं सारे सहजयोगियों को क्षमा करता हूं क्योंकि वे सब मुझसे कहीं अच्छे हैं। मैं उनके दोष खोजने की चेष्टा करता हूं पर वास्तव में मैं उन सबसे तुच्छ हूं। मुझे सबको क्षमा करना है क्योंकि मुझे अभी बहुत दूर जाना है। मैं अभी बहुत तुच्छ हूं। मुझे स्वयं को सुधारना है।

यह नम्रता हममें आनी चाहिए अतः आपको यहां कहना होगा कि :–

श्री माता जी

मेरे हृदय की सच्ची नम्रता मेरे अन्दर क्षमा–भाव उत्पन्न करे ताकि मैं वास्तविकता, परमात्मा तथा सहजयोग के प्रति नतमस्तक हो जाऊं।

अब आप अपना दायां हाथ सिर के पीछे के भाग पर रखें। सिर को अपने हाथ पर पीछे की ओर झुका लें। यहां पर आप कहें कि :–

श्री माता जी

अभी तक आपके प्रति हमने जो भी अपराध किये हैं, हमारे मस्तिष्क में जो भी बुराई आती है, जो भी तुच्छता आपको दिखाई है, किसी भी प्रकार से आपको दुःख पहुंचाया है या आपको चुनौती दी है तो कृपा करके हमें क्षमा कर दीजिए।

आपको क्षमा मांगनी पड़ेगी। अपने विवेक से आपको जानना चाहिए कि मैं क्या हूं। मुझे बार–बार यह बताने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

अब सहस्रार पर आपको मेरा धन्यवाद करना होगा। अपना दायां हाथ सहस्रार पर रखकर सात बार घड़ीकी सुई की दिशा में इस प्रकार घुमाएं कि सिर की चमड़ी भी हल्की–हल्की घूमे। सात बार मेरा धन्यवाद करें। कहें कि :–

1. श्री माता जी आत्म साक्षात्कार प्रदान करने के लिये हम आपके आभारी हैं। आपको कोटि–कोटि प्रणाम।
2. श्री माता जी हमारी महानता हमें समझाने के लिये हम आपके आभारी हैं। आपको कोटि–कोटि प्रणाम।
3. श्री माता जी परमात्मा के सभी आशीर्वाद हम तक लाने के लिये हम आपके आभारी हैं। आपको कोटि–कोटि प्रणाम।
4. श्री माता जी तुच्छता से उठा कर उच्च स्थिति पर लाने के लिये हम आपके आभारी हैं। आपको कोटि–कोटि प्रणाम।
5. श्री माता जी जो आश्रय आपने हमें प्रदान किया तथा आत्मोन्नति के लिये जो सहायता आपने कृपा करके हमें दी उसके लिये हम हृदय से आपके आभारी हैं। आपको कोटि–कोटि प्रणाम।
6. श्री माता जी हम हृदय से आभारी हैं कि आप पृथ्वी पर अवतरित हुए, मानव जन्म लिया और हम सब के उत्थान के लिये घोर परिश्रम कर रहे हैं। आपको कोटि–कोटि प्रणाम।
7. श्री माता जी हमारा रोम–रोम आपका ऋणी है। आपको कोटि–कोटि प्रणाम।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

पल्लाज अथेना पूजा

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)

यूनान–1993

पहली बार जब मैं यूनान आई तो मैने अपने पति को बताया कि यह देश चैतन्य लहरियों से परिपूर्ण है तथा यहां बहुत सी महान आत्माएं हुई हैं। सम्भवतः लोगों ने अपनी परम्परा खो दी है। फिर भी वातावरण मैं चैतन्य लहरियां हैं। एक दिन यहां सहजयोग फलना–फूलना चाहिए।

पन्द्रह वर्ष पूर्व मैं डैल्फी गई और सभी देखने योग्य स्थानों को तथा समुद्र को अत्यन्त सुन्दर पाया। अब मुझे लगता है कि आप लोगों को चैतन्य लहिरयां आ रही हैं तथा यह स्थान चैतन्यित हो गया है।

आप लोगों पर बहुत बड़ा दायित्व है क्योंकि सामरिक दृष्टि से आपका स्थान यूनान तथा तुर्की में है। पूर्वी एवं पश्चिमी भागों के मध्य आप पुल हैं। हर व्यक्ति इन दोनों क्षेत्रों को सम्भालना चाहता है ताकि वे पूर्वी एवं पश्चिमी क्षेत्रों पर शासन कर सके। सबसे बड़ा भय यह है कि कहीं पाश्चात्य संस्कृति आपको हड़प न ले। ऐसा होना अत्यन्त भयानक है। आपको पता होना चाहिये कि भारतीयों की तरह आप भी एक महान परम्परा से आये हैं जो कि युगों पुरानी है। अपने आचरण से आप यूरोप की संस्कृति को सुधारने के लिये बहुत कुछ कर सकते हैं। पर्यटक जब यहां आ कर यूनानियों का व्यवहार देखते हैं तो उन्हें लगता है कि वे यूरोप के लोगों को प्रभावित कर सकते हैं। पूर्णतया पारम्परिक होने के कारण आपने जीवन में बहुत सी अच्छी चीजों को समझा है। अपने देश की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना आपके लिये अत्यन्त आवश्यक है। सहजयोगियों के लिये इस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि कल आपको अन्य लोगों को अथेना, अपनी पृष्ठभूमि और इसका सहजयोग से सम्बन्ध, मां मैरी तथा ईसा के विषय में बताना होगा।

जैसे कि आप जानते हैं अथेना के हाथों में कुण्डलिनी है और वे स्वयं आदिशक्ति हैं। संस्कृत भाषा में अथ का अर्थ है आदि (मूल)। यूनानियों तथा भारतीयों के बीच कोई सम्बन्ध न होने के कारण यह अनुवाद न हो पाया तथा लोग अथेना का अर्थ न समझ सके। भारतीय जानते हैं कि यह स्थान आदिशक्ति की अभिव्यक्ति का है। देवी महात्म्य में यूनान को मनीपुर द्वीप कहा गया है अर्थात नाभि चक्र के अन्दर का टापू जहां देवी का निवास है। जब मैं उनके (अथेना) मंदिर गई तो मैने पाया कि वहां शिशु–देव श्रीगणेश के लिये भी एक छोटा मंदिर था। डेल्फी में उन्होंने कहा कि यह पूरे ब्रह्माण्ड की नाभि है। वहां मैने श्रीगणेश की प्रतिमा देखी। आप नाभि हैं। आप पूरे विश्व की नाभि में बैठे हुए हैं।

नाभि चक्र यदि खराब हो जाए तो पूरा जीवन दयनीय हो जाता है। नाभि के दाईं ओर जिगर है तथा बहुत से दार्शनिक भी। बहुत विचारक होने के कारण उन्होंने बहुत सी त्रासदियों का सृजन किया जिनमें कुछ सीमा तक विवाह प्रथा को चुनौती दी गई। इनमें दो स्त्रियां और एक पुरुष या एक पुरुष और दो स्त्रियां हैं। विवाह से वे कभी प्रसन्न न थे। बाईं नाभि पर सदा आक्रमण होता रहा। लोग बाईं ओर को झुक गए तथा सोचने लगे–"ये जीवन दयनीय है, त्रासदी है। हम क्यों स्वयं को प्रसन्न दिखाने का प्रयत्न करें?" फिर प्राच्य (आर्थोडाक्स) चर्च आया। यह भी स्त्रियों को अपवित्र मानता है तथा उनसे अच्छा व्यवहार नहीं करता। कई बार तो उन्हें चर्च जाने तथा किसी को छूने की भी आज्ञा नहीं होती। इसने स्त्रियों को अति संवेदनशील बना दिया। अचानक आर्थिक समस्याएं आ गई और लोग परेशान हो गए। इस प्रकार यहां बाईं ओर (भावुकता) प्रधान हो गई। बहुत से गुरु आये जिन्होंने आपकी दुर्दशा कर दी। यूनानी चर्च ने सबसे बुरा किया और आपको दोष भावना ग्रस्त कर दिया। बाद में अति कर्मी, गहन विचारक तथा घोर परिश्रमी लोगों ने इस भावुकता को प्रति संतुलित कर दिया। परन्तु अभी भी लोग आलसी अधिक हैं।

यूनान में सहजयोग फैलाने के लिये आवश्यक है कि हम अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जानें। चक्रों, केन्द्रों तथा उन्हें ठीक करने का ज्ञान दूसरी आवश्यकता है। इस ज्ञान के बिना आप लोगों का सामना नहीं कर सकते। केवल पुरुष ही नहीं, स्त्रियों को भी यह ज्ञान होना आवश्यक है। चक्र क्या हैं, वे किस प्रकार कार्य करते हैं और उसका परिणाम क्या है? चक्रों को यदि खतरा है तो हमें किस प्रकार दुःख उठाना पड़ता है। यह सारा ज्ञान आपके लिये निःशुल्क है। आपको इस ज्ञान के लिये कुछ खर्चना

नहीं पड़ता। रोजमर्रा के जीवन में जब आप सहजयोग को कार्यान्वित करने लगेंगे तो पायेंगे कि मेरी बात में कितनी वास्तविकता है। आप इसका सत्यापन कर सकते हैं। जिस चीज में हम विश्वास करते हैं उसे प्रमाणित कर सकते हैं। हम लोगों को दिखा सकते हैं कि यह सत्य है। पूर्ण सत्य। हम यहां धर्मान्धता या जातिवाद आदि फैलाने के लिये नहीं हैं। हम यहां विश्व को एक सूत्र में बांधने आये हैं क्योंकि हम सब एक ही ब्रह्माण्ड से संम्बन्धित हैं। यदि लोग आपसे पूछें कि क्या हमें हमारा धर्म त्यागना पड़ेगा तो आपको उनके प्रति कठोर नहीं होना। धीरे–धीरे सब ठीक हो जाएगा। आप सब जब सहज में आये थे तो ऐसे ही थे। शनै–शनै आप परिपक्व हुए हैं आपने सहजयोग को समझा है। इसी प्रकार सूझबूझ, करुणा और प्रेम से आप लोगों को सहजयोग सिखाइए। नहीं तो प्रायः लोग सोचते हैं कि उन्हें हर समय प्रताड़ित किया जाता है। कुछ लोग खराब भी होते हैं। उनके साथ आपका चल पाना कठिन है। फिर भी आपको अधिक से अधिक लोगों को अपनी करुणा, सूझबूझ तथा दूसरों की भावनाओं के प्रति सम्मान से सहजयोग में लाना है। मैंने देखा है कि अचानक ही कोई व्यक्ति आकर परेशान करने लगता है, दुर्व्यवहार करने लगता है। यदि हमें सूचित किया जाये तो हम उसे सहजयोग से निकाल सकते हैं या ठीक कर सकते हैं। परन्तु आप सब इस बात को अच्छी तरह से जान लें कि आप सबमें वे शक्तियां हैं जिनसे आप स्वयं को रोग मुक्त कर सकें और सुधार सकें तथा दूसरों की भी सहायता कर सकें। आप स्वयं सभी कुछ कर सकते हैं। केवल आपको सच्चा तथा ईमानदार होना पड़ेगा। बिना सच्चाई और ईमानदारी के कार्य न होगा। इतना ही नहीं इसका आप पर विपरीत असर होगा। सहजयोग में सच्चाई अति महत्वपूर्ण है। आप यहां मोक्ष प्राप्ति तथा दूसरों की सहायता के लिये हैं। पूरे विश्व के लोगों को आपकी सहायता की आवश्यकता है। इतनी समस्याएं तथा आपत्तियां हैं। अब हमें दृढ़, सन्तुलित, शांत और उचित–अनुचित को समझने वाले लोगों की आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त आप समझें कि आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर चुके हैं। बहुत से लोग कहेंगे कि हम इतने धार्मिक हैं, देवताओं की इतनी प्रार्थना करते हैं फिर भी हमें क्या मिला? बिना जुड़े आप कुछ नहीं पा सकते।

आपको परमात्मा से सम्बन्ध बनाना होगा। एक बार ऐसा करने पर आप पायेंगे कि चीजें ठीक होने लगी हैं। स्वयं में सच्चाई तथा श्रद्धा अति आवश्यक है। आपको स्वयं पर विश्वास होना चाहिए कि आप योग्य व्यक्ति हैं तथा आप अति उच्च दर्जे की चेतना प्राप्त कर सकते हैं जिससे बहुत से कार्य आप कर सकते हैं। आपको देश, जाति तथा पृष्ठभूमि से कोई अंतर नहीं पड़ता। आप सभी बहुत अच्छा कार्य कर सकते हैं। रूस जैसे देश में जहां कोई आशा न थी, बहुत अच्छा कार्य हो रहा है। वे सहजयोग को तुरन्त समझते हैं तथा स्वीकार करते हैं। उनकी सच्चाई को चुनौती नहीं दी जा सकती। इस प्रजातन्त्र ने हमें बहुत हानि पहुंचाई है यद्यपि इसी के कारण हम सहजयोग कर सकें। यहां लोग अति मूढ़ हैं। अमेरिका में मैंने पाया कि लोग गुसल का सामान, पर्दे, साबुन आदि खरीदने में व्यस्त हैं। रूस में लोग बहुत समझदार, गहन तथा अर्न्तदर्शी हैं, वहां के कलाकार तथा वैज्ञानिक भी। ऐसे प्रजातन्त्र का क्या लाभ जो हमें परमात्मा तक न ले जाए, परमात्मा को देखने तथा उनके प्रति नम्र होने का विवेक न दे। लोग अत्यन्त धनाभिमुख है। प्रजातन्त्र धन चालित है। यूनानी तथा इटली के लोग अत्यन्त धनाभिमुख हैं। इटली में भयंकर भ्रष्टाचार है। अब इटली का पर्दाफाश हो रहा है। परन्तु सर्वप्रथम सहजयोगियों को दृढ़ होना होगा। उन्हें समझना चाहिए कि ज्योतिर्मय आत्मा ही सहजयोग है। और आपकी आत्मा ने ही सारा कार्य करना है तथा यह भी जानना है कि आप यह शरीर, धन, पदवी, सत्ता नहीं है। आप आत्मा हैं।

आपको अवश्य सामुहिकता में आना चाहिए और अपना चित्त किसी और पर न रख कर मुझ पर रखना चाहिए। अपने चित्त को आप ठीक रखें। आपका चित्त कहां है? क्या आप अपना सिर बार–बार घुमाते हैं या अपने सिर को सीधा रखते हैं? अपने चित्त को पूर्णतया ठीक रखना अत्यन्त आवश्यक है। ध्यान रखें कि आप सामुहिकता के लिये आए हैं। इस प्रकार यदि आपका चित्त ठीक है तो आप निर्विचार समाधि की अवस्था तक उठ जायेंगे जहां आपका आध्यात्मिक उत्थान होता है। आपको निर्विचार समाधि की अवस्था तक उठना होगा। इसके बिना आपका आध्यात्मिक उत्थान न होगा। अतः अपने चित्त को देखना आवश्यक है। चित्त को यदि काबू कर लिया जाये तो सब ठीक हो जायेगा।

सामुहिकता में होना पहली आवश्यकता है। सदा सामुहिकता को तोड़ना, समस्याएं खड़ी करना और नेताओं की अवहेलना

करना कुछ लोगों का दुर्भाग्यपूर्ण विचार है। परिणामतः परेशान हो कर नेता भी त्याग देते हैं। ऐसे लोग सदा नेता के लिये समस्याएं खड़ी करते हैं और हर जगह अपना महत्व दिखाने का प्रयत्न करते हैं जैसे वे सब कुछ जानते हों। ऐसे लोग गुट बनाते हैं अतः उनसे सावधान रहना चाहिए। सदा सामुहिकता के साथ रहें। गुट बनाने तथा कठिनाइयां उत्पन्न करने वाले लोगों का साथ न दें। समझ लें कि सामुहिकता में रहने वालों का ही उत्थान होगा। यह नाखून की तरह है। एक बार यदि ऊंगली से अलग हो जाये तो बढ़ नहीं सकता। नेता से आपको यदि कठिनाई है तो आप मुझे लिख सकते हैं या बता सकते हैं। मैं इसे ठीक कर दूंगी। सदा नकारात्मक लोगों से सावधान रहिए। सदा सामुहिकता का साथ दीजिए, सहायता कीजिए और इसका पोषण कीजिए। आप यहां अपने आध्यात्मिक विकास के लिये हैं, मूर्ख लोगों को सुनने के लिये नहीं। अपने विकास तथा पोषण में लगे रहना ही ठीक है। सामुहिक होने के साथ–साथ सहजयोग व्यक्तिगत भी है। स्वयं देखिये कि सामुहिकता से आपको क्या लाभ हो रहा है।

घर पर प्रतिदिन सोने से पूर्व अवश्य ध्यान करें। पानी में बैठने के बाद दस मिनट ध्यान के लिये बैठें। स्वयं को पंद्रह मिनट देने के बाद सोयें। किसी रात यदि ध्यान न हो पाए तो कोई बात नहीं, पर रोज रात को ध्यान करने का प्रयत्न करें। यह अत्यन्त आवश्यक है। मैं सुगमता से समझ लेती हूं कि कौन व्यक्ति ध्यान करता है और कौन नहीं करता। प्रतिदिन ध्यान करने वाले व्यक्ति के स्वस्थ, शक्ल तथा आचरण से मुझे पता चल जाता है। ध्यान न करने वाले स्वयं तो हास्यजनक होते हैं हीं, उनके बच्चे तथा सम्बन्धी भी वैसे ही होते हैं। ध्यान आपका आवश्यक अंश है। जो गर्भवती स्त्रियां ध्यान नहीं करतीं उनके बच्चे अत्यन्त दुःखदायी निकलते हैं। इसका प्रभाव हर चीज पर पड़ता है। आपका ध्यानमय तथा सहजयोग चरित्र सबका सहायक होता है। आपके बच्चे, परिवार, समाज तथा हर व्यक्ति समझ जाता है आप कैसा परिवार हैं, कैसे लोग हैं तथा कैसे व्यक्तित्व हैं। आप ही को देखकर वे सहजयोग अपनाते हैं। व्यक्तिगत जीवन में भी समर्पण आवश्यक है। आपको निर्विचार समाधि की अवस्था तक आना होगा। इसका मंत्र है 'निर्विचारिता', उपयोग करें। निर्विचार समाधि का समय बढ़ाते चले जाएं।

ज्यों–ज्यों आपको अधिक शक्तियां मिलती जाएंगी और आप द्वारा साक्षात्कार पायें तथा रोगमुक्त हुए लोगों की संख्या बढ़ती चली जाएगी तो इसका प्रभाव आपके अहं पर भी पड़ सकता है। इसके लिये आपको स्वयं को देखना होगा तथा अन्तर्दर्शन करना होगा। शीशे के सामने खड़े होकर पूछें कि आपमें कितना अहं है और उस पर हंसें। एक बार व्यर्थ मान कर जब आप अपने अहं पर हंसने लगेंगे तो आपका अहं छूट जाएगा। अपने बारे में जानने के बहुत से तरीके हैं। बंधन लेकर अपने हाथ फोटो की ओर करें। तुरन्त आप जान जाएंगे कि कौन से चक्र पकड़ रहे हैं। इन्हें ठीक करना भी आप जानते हैं। कई बार आपके चक्र यदि पकड़ रहे हों तो अपने अंदर आपको इनका पता चलता है। दूसरों के विषय में केवल चक्रों पर ही बात करें। ये न कहें कि वह भूत–बाधा ग्रस्त है या उसमें अहं है। आप कह सकते हैं कि उसकी आज्ञा पकड़ रही है। अर्थात उसमें अहं है। अब आपको भाषा बदलनी चाहिए। हमें सहजयोग की भाषा में बात करनी है। समझना आवश्यक है कि हम सहजयोगी हैं। हमारे पास शक्तियां हैं–चैतन्य लहरियों की शक्तियां। यदि आप इनका उपयोग नहीं करते तो क्या होगा। हमें इनका उपयोग करना है। छोटे–छोटे काम भी यदि न बन रहे हों तो आपके बंधन देने से बन जाते हैं। यह समझना अत्यन्त आवश्यक है कि आप सहजयोगी हैं और बहुत कार्य कर सकते हैं। अब आप साधारण व्यक्ति नहीं हैं। आप संत हैं और बहुत कुछ कर सकते हैं। यह सब जब कार्यान्वित होगा तो आप स्वयं पर आश्चर्यचकित रह जायेंगे कि कैसे आपने यह सब पा लिया।

हर समय याद रखें कि आप क्या हैं। आप एक सहजयोगी हैं। बच्चों से भी आप कहें कि आप सहजयोगी हैं ताकि वे भी सहजयोगी की तरह गरिमामय व्यवहार करें। नये युग (सत्य युग) का आरंभ हो गया है। अब असत्य का पर्दाफाश होने लगेगा। सभी झूठे लोग अनावृत हो जायेंगे और आपको ही यह सब करना है। ऐसे महान समय पर आपने जन्म लिया है। आपका सहजयोग में आना तथा साक्षात्कार पा लेना बहुत बड़ी बात है। अब आप ही लोगों ने पूरे ब्रह्माण्ड को एक उच्च चेतना के स्तर तक ले जाना है। हम नहीं कह सकते कि कितने लोग बच पाएंगे। विकास प्रक्रिया में भी हम वनमानुषों से विकसित हुए हैं। बहुत से बीच ही में रह गए और कुछ अभी तक भी वनमानुष हैं। इसी प्रकार अपनी मूर्खतापूर्ण तथा आत्मघाती आदतों के कारण बहुत से मनुष्य भी इस विकास प्रक्रिया में खो जाएंगे। आप पर महान दायित्व है। कभी न सोचें कि मैं मध्यम दर्जे का हूं या बेकार हूं। इस प्रकार कभी न सोचें। आप सब संत हैं तथा आप में महान कार्य करने की क्षमता है। ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

ईस्टर पूजा

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)
मैगलानो. इटली, 11 अप्रैल, 1993

आज हम सब लोग इस सुन्दर पर्वत की चोटी पर ईसा का पुनर्जीवन मनाने के लिये एकत्र हुए हैं। पुनर्जीवन की इस घटना को समझना सहजयेगियों के लिये महत्वपूर्ण है क्योंकि इस घटना के द्वारा ईसा ने दर्शाया कि आत्मा अमर है। वे ओंकार थे। वे ही लोगोस थे तथा आत्मा भी थे। इसी कारण वे जल पर चल सके। अभी एक फिल्म बनाई गई है जिसमें मूलाधार को दिखाया है। मूलाधार में कार्बन के कण दिखाई पड़ते हैं। इसे जब आप दायें से बायें देखते हैं तो पूरा स्वास्तिक दिखाई पड़ता है तथा बायें से देखने पर ओंकार। इसको नीचे से ऊपर देखने पर आपको अल्फा और ओमेगा दिखाई देते हैं। इससे प्रमाणित होता है कि जब ईसा ने कहा कि मैं ही अल्फा हूं और मैं ही ओमेगा हूं तो इसका अर्थ यह था कि वे ही श्रीगणेश के अवतरण थे। अब हमारे पास वैज्ञानिक प्रमाण हैं और अब हम लोगों को बता सकते हैं कि यह सच्चाई है।

हमारे उत्थान के लिये वे अत्यन्त महत्वपूर्ण अवतरण थे। यदि वे स्वयं पुनर्जीवित न हुए होते तो हमें उत्थान प्राप्ति न हो पाती। ईसा का पुनर्जीवन आपके जीवन से प्रत्यक्ष है। पहले आप क्या थे और आज क्या हैं? कितना परिवर्तन है, कितना अन्तर है तथा कितनी कायापलट है। उनके बलिदान (क्रूस रोपण) और सुन्दर पुनर्जीवन ने हम सबके लिये यह परिवर्तित अवस्था प्राप्त करने का मार्ग बनाया है। पर यह अवस्था मानव के लिये भिन्न है तथा ईसा के लिये भिन्न। ईसा स्वयं पवित्रता तथा विशुद्धता थे। उनका पुनर्जीवन मात्र शारीरिक घटना थी क्योंकि उन्हें कायापलट की कोई आवश्यकता न थी। उन्हें शुद्धिकरण नहीं करना पड़ा। मृत्यु से उनका पुनर्जीवित होना इस बात का प्रतीक है कि मानव का अध्यात्मिक विहीन जीवन मृत्यु सम है क्योंकि मानव पूर्णत्व, वास्तविकता तथा पूर्ण सत्य को समझे बिना ही सभी कुछ करता रहता है। उसका हर कर्म अनन्तोगत्वा उसे विनाश की ओर ले जाता है। यहां तक कि इन अवतरणों द्वारा चलाये गये धर्म भी पतनोन्मुख हैं। इन अवतरणों के प्रतिनिधि कहलवाने वाले लोगों में भी हमें धार्मिकता का नामोनिशान नहीं मिलता

सूक्ष्मता से यदि आप देखें तो यह अति पीड़ाकारक है कि लोग इन महान अवतरणों के नाम पर इतने जघन्य कर्म कर रहे हैं। उन्हें परमात्मा का भय ही नहीं। परमात्मा के नाम पर पूरे विश्व में पाप किए जा रहे हैं। यहां कैथोलिक चर्च का पर्दाफाश हुआ है। लोग देख रहे हैं कि जगह–जगह झूठ का अनावरण हो रहा है। पर इस झूट का उपयोग परमात्मा, अध्यात्मिकता और सौंदर्य के नाम पर हुआ है। झूठ छिपाने का यह सबसे बढ़िया तरीका है। अत्याचार, हिंसा, भद्दापन इस प्रकार छा गया है कि इन लोगों में धार्मिकता का नामोनिशान भी आप नहीं पा सकते। सभी चोरों, बदमाशों तथा कुचक्रियों ने सत्ता सम्भाल ली है। इसका कारण, जैसे कि सभी धर्म–ग्रन्थों में लिखा है, आत्मा की खोज न करना है। बार–बार ईसा ने कहा है कि "स्वयं को पहचानो।" उन्होंने यह भी कहा कि आपको पुनर्जन्म लेना होगा। ये लोग एक दम प्रमाणपत्र ले लेते हैं कि मेरा पुनर्जन्म हो गया है तथा इस प्रमाणपत्र का दुरुपयोग करने लगते हैं। वे नहीं जानते कि इसका उन्हें क्या लाभ हुआ। ज्यादा से ज्यादा वे कुछ धन कमा लेते हैं या कुछ सतही शक्तियां पा लेते हैं। पर इससे कुछ नहीं हुआ। ध्यान से यदि उन्हें देखें तो उनके पागलपन पर दया आती है। ईसा तथा अन्य महान अवतरणों के नाम पर वे घिनौने कार्य कर रहे हैं।

सहजयोग में आपने अपना कायाकल्प कर लिया है। मैं कहूंगी कि आपकी कुण्डलिनी ने कार्य कर दिया है। पर अभी भी आपमें तथा ईसा में अन्तर है। आप एक ऐसे वातावरण, जीवन शैली तथा विचारों से आये हैं जो घातक हैं। आप देखें कि सभी कुछ आपके विनाश के लिये था। अब जब आप इससे मुक्त हो रहे हैं फिर भी इनकी पकड़न है। अब भी आप इनसे प्रभावित हो जाते हैं। ऊंचाई की ओर बढ़ते हुए भी अचानक आप पाते हैं कि आपको किसी हास्यास्पद अवस्था किसी लज्जाजनक स्थिति में घसीट लिया गया है। निसन्देह आपको कई बार स्वयं पर हैरानी होती है। कभी आप यह सब स्वीकर कर लेते हैं।

साक्षात्कार प्राप्त एक सहजयोगी के लिये आवश्यक है कि वह अत्यन्त अन्तर्दर्शी हो। दूसरों के दोष देखने के स्थान पर वह अपने दोष देखे। आपको पता होना चाहिए कि आध्यात्मिकता में आप कहां तक जा रहे हैं। ईसा को तो यह सब करने की आवश्यकता न थी। उन्हें तो अन्तर्दर्शन की भी आवश्यकता न थी। वे तो भ्रष्टाचार से परे थे। मृत्यु और फिर पुनर्जीवन तो उनके लिये शारीरिक परिवर्तन मात्र था। वे मरे और पुनर्जीवित हो गए। पर हमारे लिये यह बिल्कुल भिन्न है। अब हम सहजयोगी हैं परन्तु पहले हम साधारण मानव थे और हमारे अन्दर प्रकाश न था।

अब हममें प्रकाश आ गया है। तो हमें क्या बनना है? हमें प्रकाश बनना है। ईसा को ऐसा नहीं बनना पड़ा। हमें प्रकाश बनना होगा। अब आपने सावधान रहना होगा कि कहीं उस प्रकाश में बाधा न आ जाए। कभी ये कम न होजाए या कहीं ये दीप बुझ न जाए। इस प्रकाश के साथ चलना पहली आवश्यकता है। यदि प्रकाश में गड़बड़ है तो आप अभी प्रकाश नहीं है। आपको प्रकाश बनना है। जब आप प्रकाश बन जायेंगे तो देख सकेंगे कि आपका मस्तिष्क किस प्रकार कार्य करता है। कौन से विचार यह देता है तथा उत्थान के समय आपके मस्तिष्क को क्या प्रभावित करता है। क्या ये चिंता है या आपकी जिम्मेदारियां? या ये आपकी बुरी आदतें हैं? अध्यात्मिक व्यक्तित्व के आपके विकास में एक बाधा है। अतः हर क्षण आपने अपनी रक्षा करनी है और देखना है कि किस प्रकार आप उन्नति कर रहे हैं। यह अति सुन्दर यात्रा है।

निसंदेह यह सत्य है कि आप साक्षात्कारी आत्माएं हैं। मूलतः आप आत्म साक्षात्कारी न थे। अब आप एक विकसित अवस्था में हैं। अब कमी हमारा यह विचार है हम पूर्णतया ठीक हैं और हमें कुछ भी हानि नहीं पहुंचा सकता। ऐसा अहंकार पूर्ण विचार यदि आपमें आ गया तो इससे आपको कोई लाभ न होगा। आपको हर समय अन्तर्दर्शन करना है, 'ध्यान' इसी के लिये है। स्वयं देखिये कि किस प्रकार आप अपने आध्यात्मिक उत्थान को आगे बढ़ा रहे हैं। कोई अन्य यह कार्य नहीं कर सकता। यह आपका व्यक्तिगत कार्य है। पर ज्योंही आप सामूहिकता में जाएंगे तो सहजयोगी जान लेंगे कि आपके कौन से चक्र पकड़ रहे हैं। चाहे वे कुछ न कहें फिर भी वे जान अवश्य जायेंगे। परन्तु वे अपनी पकड़ को न जान पाएंगे। यदि कोई आपसे कह दे कि आपका यह चक्र पकड़ रहा है तो बुरा न मानें क्योंकि उस चक्र को ठीक न करके आप अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं। आपको चाहिए कि उस व्यक्ति को धन्यवाद दें। शीशे में देखकर यदि आपको लगे कि आपके चेहरे पर कुछ गड़बड़ है तो आप तुरन्त उसे ठीक करते हैं। इसी प्रकार यदि कोई आपके चक्र के बारे में बता दे तो आपको कृतज्ञ होना चाहिए।

दो नेताओं को परस्पर कभी झगड़ना नहीं चाहिए। दो आंखें, दो हाथ, दो टांगें कभी लड़ती नहीं। पर दो नेताओं के बीच सदा समस्या होती है। दो नेता आपस में बहस कर रहे थे। मैंने देखा कि उनमें से एक पूर्णतया पकड़ा हुआ था। मैंने कहा "अपने हाथ मेरी ओर कीजिए।" उसे जलन होने लगी। उसने महसूस किया कि वह अति क्रोधी तथा अहंकारी है और उसे इस प्रकार व्यवहार नहीं करना चाहिए था। मेरे कहने का वह बुरा भी मान सकता था परन्तु उसने बुरा नहीं माना क्योंकि एक सहजयोगी है और जानता है कि उसके हित में क्या है। उसकी अच्छाई किस बात में है। वह मेरे पास आया था कि "श्री माता जी, आपके कारण मेरा दोष पकड़ा गया नहीं तो मैं इसे अपने अंदर छिपाए हुए था।"

हमारी समस्या यह है कि हमने अपने अंदर काफी विकास कर लिया है और उसका दृढ़ीकरण भी कर लिया है। हमारे पास महान सामूहिक शक्ति भी है जिसे मैं हर देश में देख सकती हूं। अपने जीवनकाल में ही हम यह सारे महान सत्य संस्थापित (प्रमाणित) कर सकते हैं। पर एक बात पर व्यक्ति को अत्यधिक विश्वस्त नहीं होना चाहिए कि आप पूर्णतया अंतिम सत्य तक पहुंच गए हैं। इस मामले में आपको बहुत सावधान रहना है। मैंने देखा है कि सहजयोग में लोग बहुत ऊंचाई पर पहुंच जाते हैं पर अचानक उनका पतन हो जाता है। इससे मैं बहुत खिन्न हो जाती हूं। कारण यह है कि उनमें विश्वास नहीं है, अपने पर तथा सहजयोग पर। आपको अपने पर तथा सहजयोग पर विश्वास करना होगा। सहज का अर्थ है कि दैवी-शक्ति है और यह सर्वव्यापक दैवी शक्ति हम सबकी देखभाल कर रही है। अब इसका अनुभव हो गया है। पर सब जान कर भी आपके अंदर दृढ़ श्रद्धा नहीं है। अन्ध श्रद्धा से आप गलतियां कर सकते हैं परन्तु प्रकाशित मस्तिष्क से यदि आपमें श्रद्धा आ जाए तो आप अत्यन्त शक्तिशाली बन जाते हैं। आपका विश्वास यदि प्रकाशित हो तो कोई समस्या नहीं रहती। आपने देखा होगा कि सहजयोग में जो लोग नियमित तथा ईमानदार हैं वे बहुत अमूल्य हैं। वे चट्टान

की तरह दृढ़ हैं, किन्तु कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अभी तक सांसारिक बातों में उलझे हुए हैं। दृढ़–विश्वास वाले लोग भी हैं जो यह जानते हैं कि उन्हें कुछ भी परेशान नहीं कर सकता। जहां तक ईसा का प्रश्न है उन्हें हर चीज का ज्ञान था और इसके बारे में वे विश्वस्त थे। कभी क्षीण नहीं होते थे। कभी सन्देह नहीं करते थे। वे जानते थे कि वे परमात्मा के बेटे हैं। इसको उन्होंने कभी चुनौती नहीं दी। श्रद्धा के मामले में सहजयोगियों तथा अन्य लोगों को ईसा की तरह बनना होगा। श्रद्धा को समझा जाना चाहिए। यह ज्योर्तिमय श्रद्धा है। ईसा ने इसलिये दुःख उठाये तथा क्रुसा रोपित हुए क्योंकि वे जानते थे कि यह सब एक नाटक है। क्रूसारोपण में कोई गंभीर बात नहीं क्योंकि वे स्वयं को पुनर्जीवित करने वाले थे। लोगों को उन्होंने मजाक उड़ाते हुए देखा। अपने हृदय में वे जानते थे कि उनका मजाक करने वाले लोग कुछ भी नहीं जानते। अपने पर तथा सर्वव्यापक शक्ति पर श्रद्धा तथा विश्वास के तो वह अवतरण थे। परन्तु ऐसा बनने के लिये पूर्ण विश्वास आवश्यक है। जिस व्यक्ति पर मुझे विश्वास होगा उसी को तो मैं सारा काम दूंगी तथा उसी पर भरोसा करुंगी। ऐसे ही व्यक्ति को चाबियां तथा धन दूंगी और उस पर कभी संदेह भी नहीं करुंगी। इसी प्रकार यदि आपको स्वयं पर तथा सहजयोग, जिसमें आप स्थापित हैं, पर विश्वास है तो आप हैरान होंगे कि किस प्रकार कार्य होंगे, किस प्रकार आपके जीवन में सुधार होंगे और आपका आधार चट्टान की तरह दृढ़ हो जाएगा। आप ऐसा ही महसूस करेंगे। आपको संदेह, समस्याएं तथा रोग न होंगे। यह ऐसी अवस्था है।

किस प्रकार आप यह श्रद्धा पाते हैं ? इसके लिये न कोई पाठ्यक्रम है और न कोई साहित्य। परन्तु आपके अन्दर जागृति होती है जो प्रश्न करेगी कि मैं क्या हूं। मैंने क्या प्राप्त किया है ? ये पूछेंगी कि मैंने क्या पाया है ? सहजयोग से मुझे क्या मिला ? ये सभी प्रश्न आपसे पूछे जाएंगे। परन्तु यदि आपका विश्वास प्रकाशित है तथा जिसे जीवन के बहुत से चमत्कारों ने प्रकाशमय बनाया है तो छोटी–छोटी चीजों में आपको चमत्कार दिखाई पड़ेंगे। तब आप जानेंगे कि अब आप सहजयोग में जम गए हैं। उदाहरणतया यदि वर्षा होने लगे तो आपमें से अंधे लोग चिंतित हो जायेंगे, परन्तु वे जान जाएंगे कि सुन्दर छत है और कुछ नहीं हो सकता। वर्षा होने दो। तब आपको विश्वास होगा कि वर्षा हमें गीला नहीं कर सकती। इस तरह हमारे अंदर यह विश्वास दृढ़ होना चाहिए। विश्वास आपको अत्यन्त दृढ़ तथा हजारों लोगों को पुनर्जीवन देने योग्य बनाता है। हमें समझ लेना चाहिये कि हमारी अपनी स्थिरता, सूझबूझ तथा अवलोकन द्वारा ही हम अपने अन्तस में तथा सहजयोग में स्थापित हो सकते है। यह हुआ है और आप सबके साथ भी घटित होना चाहिए। आप सबको स्वयं को तथा अपनी आत्मा को जानने का अवसर मिलना चाहिए। व्यक्ति का स्वयं पर विश्वास होना चाहिए। मैने देखा है कि बहुत से सहजयोगी आ कर कहते हैं कि "श्री माताजी मुझमें कोई गुण नहीं, मैं बैकार हूं। मैं कोई काम नहीं करता।" यह ठीक है पर जो भी आप चाहते हैं वो मांगिए। आप न भी मांगे तो भी यह हो जाएगा। केवल आपके सोचने तथा चित्त देने से भी कार्य हो जाएगा क्योंकि यह सर्वव्यापक शक्ति ही वास्तविक शक्ति है। बाकी सारी शक्तियां व्यर्थ हैं। यह इतनी कार्यकुशल तथा करुणामय है कि एक क्षण से भी कम समय में यह कार्य कर सकती है। उस दिन एक आस्ट्रेलियन को किसी ने धोखे से कुछ जमीन तथा घर बहुत महंगे दामों पर लेने को मजबूर कर दिया। उसके पास धन न था। उन्होंने कहा कि कोई बात नहीं जितने पैसे आपके पास हैं दे दो, बाकी बाद में दे देना। विश्वास करके उसने अपना सारा धन बयाने के रुप में दे दिया। अब बेचारा बहुत परेशान हुआ कि यदि उसने बाकी का ऋण न चुकाया तो उसे जेल जाना पड़ेगा। समझ न पा रहा था कि किस प्रकार झंझट से छुटकारा पाये। उसके पास कोई सहजयोगी गया और कहा कि स्वयं पर विश्वास रखो। किसी अन्य व्यक्ति ने कहीं बड़ी रकम में वह जमीन उससे मांग ली। इस प्रकार जेल जाने के स्थान पर धनवान बन गया। इस प्रकार बहुत से चमत्कार हो जाते हैं। आत्म साक्षात्कार के बाद भी विश्वास का न होना दर्शाता है कि आपका व्यक्तित्व कितना दुर्बल है। हैरानी की बात है कि आत्म साक्षात्कार के बाद भी लोगों में आत्म विश्वास नहीं होता। जिनमें है उन्होंने बहुत कुछ प्राप्त कर लिया है। हममें और ईसा मेंयह अंतर है कि विश्वास ईसा का अंग–प्रत्यंग था। वे ही विश्वास थे। पर हमें विश्वास करना पड़ता है। हमें स्वयं पर भरोसा करना पड़ता है। रोमानिया में व्हील चेयर पर एक स्त्री को मेरे पास ले आये। वह चल न पाती थी। कहने लगी "मां, मैं जानती हूं कि आप मुझे ठीक कर सकती हैं।" मैंने कहा "यदि तुम्हें विश्वास है तो खड़ी हो जाओ। वह खड़ी हो गई और चलने लगी।

विश्वास हो तो सारे देवता सहायक होते हैं। उन्हें ऐसा करना

पड़ता है। आपने उस व्यक्ति में विश्वास दर्शाया है। मैने आपसे बताया है कि सहजयोग में हम लोगों पर विश्वास करते हैं। सैंकड़ों में से कोई एक धोखा देता है। कोई बात नहीं। हम विश्वास करते हैं। किसी पर जब आप विश्वास करते हैं तो यह उसके मस्तिष्क में कार्य करता है। परन्तु देवताओं में आपका विश्वास तुरन्त कार्य करता है। अपने विश्वास पर यदि आपका वश है तो आप किसी भी चीज को वश में कर सकते हैं। विश्वास की बात करना आयोजन करने वाली, विवेकशील, कार्यकुशल तथा प्रेममय सर्वव्यापक शक्ति को चुनौती है। तब आप विश्वास दिखाते हैं। सहजयोग में पुनर्जीवन यही है कि आपका विश्वास दृढ़ हो। तो आपको दृढ़ विश्वास प्राप्त करना है। तब कोई बुरा नहीं मानता चाहे मैं उनसे नहीं मिलती। किसी वक्त चाहे मैं उन्हें बुला कर भी वहां न मिलूं। किसी बात से वे बुरा नहीं मानते। श्री माता जी हमसे मिलें या न मिलें कुछ हो या न हो, सभी कुछ हमारे हित के लिए है। आप रास्ता भी भूल जाएं तो आप जानते हैं कि यह ऐसे ही होना था। ईसा के जीवन को यदि आप देखें तो उनका क्रूसारोपण होना था, उन्हें क्रॉस उठाना था। ठीक है कि उन्हें यह सब करना था। उन्हें विश्वास था कि मैं यह सब कर लूंगा। कभी उन्होंने शिकायत नहीं की। उन्होंने कभी किसी से सहायता के लिये नहीं कहा। पर परमात्मा के विश्वास ने उन्हें अद्‌भूत शक्तियां दी। वे कुछ भी कर सकते थे। क्रूसारोपित करने वाले सभी लोगों को वे आसानी से समाप्त कर सकते थे। पर वे जानते थे कि उन्हें यह सब सहना है। वही विजेता हैं। इसी प्रकार सहजयोगी को अपने जीवन की देखभाल करनी चाहिए। जीवन बहुत अमूल्य है। कितने लोग सहजयोगी हैं? विकास प्रक्रिया में कितने लोग सहजयोगी बन पायेंगे? संसार को यदि आप देखें तो आपको लगता है कि इसका नाश हो जायेगा। अधिकतर लोगों के भाग्य में सहजयोग नहीं है। वे सहजयोग में आने के लिये नहीं बने हैं। आप अत्यंत भाग्यशाली हैं कि आपको साक्षात्कार और पुनर्जीवन मिला। अब इस पुनर्जीवन में विश्वास करें, आपका अस्तित्व बन गया है। इससे आपको पता लगेगा कि आप कितने मूल्यवान हैं। आपको भौतिक, शारीरिक तथा भावनात्मक लाभ को न सोचकर आध्यात्मिक लाभ को सोचना है। हमने अपनी तथा अन्य लोगों की आध्यात्मिकता के लिये क्या किया? केवल यही बात हमने सोचनी है। और आप हैरान रह जायेंगे कि हर चीज आयोजित है, कार्यान्वित है तथा समय आने पर परिणाम दिखाती है।

उस दिन एक सम्वाददाता कहने लगा कि मैं परमात्मा में विश्वास नहीं करता क्योंकि यदि परमात्मा होता तो संसार में इतने दुःख न होते। जन्मान्ध बच्चे न होते। मैने कहा "अभी आप कांग्रेस सरकार के राज्य में बैठे हैं। पहले परमात्मा के साम्राज्य में जाकर स्थापित हो जाओ और फिर बताओ कि आपको कोई समस्या है? आप इसका अंधेरा पक्ष क्यों देखते हैं? यदि हम कहें कि एक रास्ता है और समय आ सकता है जब सहजयोगियों की जाति में कोई रोग, दुख और समस्या न होगी। तो क्यों न इसे देखा जाए? आप एक अंधे बच्चे को ही क्यों देखते हैं? आप यह क्यों नहीं देखते कि अंधे ठीक भी हो जाते हैं। इस प्रकार का नकारात्मक विचार सहजयोगियों में भी हो सकता है। मैने देखा है कि यदि कोई बीमार है तो उसे मेरे पास लाना चाहते हैं। किसी व्यक्ति की पत्नी ने अपने सहजयोगी भतीजे से कहा कि श्री माता जी से प्रार्थना करो कि मेरे पति को ठीक कर दें। मृत्यु शैय्या पर पड़ा वह कैन्सर रोगी था। वह लड़का झुक गया और प्रार्थना की कि श्री माता जी कृपा करके मेरे चाचा को ठीक कर दीजिए। चाहे वह रोगी सहजयोगी नहीं है फिर भी तीसरे दिन वह हस्पताल से बाहर था। सहजयोगी की प्रार्थना पर देवताओं को कार्य करना पड़ा। इसके लिये व्यक्ति को स्वयं पर पूर्ण विश्वास करना पड़ता है कि ये शक्तियां हमारे साथ हैं। क्यों न इसका उपयोग कियाजाए क्यों न पूर्ण विश्वास विकसित किया जाये कि अब हम सहजयोगी हैं और परमात्मा के साम्राज्य मे हैं तथा वह शक्ति हमारी देखभाल करेगी। तब हममें कोई संकोच न रह जायेगा। विश्व में जहां मर्जी आप चले जाएं पर आप होंगे परमात्मा के साम्राज्य में। किसी प्रकार की कोई चिंता न होगी। हम समय तथा बंधनों के दास हैं। सब बंधन छूट जायेंगे। जब तक आप स्वयं में रहेंगे सब ठीक रहेगा। बहुत से लोग पूछते हैं कि जहां हमने जाना है वहां गुसलखाना तथा सोने का स्थान होगा या नहीं। आप तो आत्मा का सुख खोज रहे हैं। यदि आप ठीक तरह चलते रहे तो आप कहीं भी सो सकते हैं। कुछ भी आपको बांध नहीं सकता, गिरा नहीं सकता। कोई आदत आपको परेशान नहीं कर सकती क्योंकि विश्वास आपको पूर्णतः पवित्र कर देगा। यह आपको ज्योति देगा, आपका पोषण करेगा। यह विश्वास ऐसी चीज नहीं जिसे आपके दिल या दिमाग में भर दिया जाये। यह एक अवस्था है जिसे आपने प्राप्त करना है और यह सहजयोग से प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार हमारा पुनर्जीवन पूर्ण होगा, स्थापित तथा प्रभावशाली होगा और पूरे विश्व के लिये नमूना बन जायेगा। परमात्मा आपको धन्य करे।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

मृत सागर से प्रलेख

वैंकूवर–कैनेडा 24.6.93

वर्ष 1992 के अंत में रोबर्ट आइनमैन तथा माइकल वाइज लिखित पुस्तक "द डैड सी स्क्रॉलज़ अनकवर्ड" नामक पुस्तक छपी। इस पुस्तक में चिरकाल से दबे हुए ऐतिहासिक प्रलेखों (दस्तावेजों) के कुछ हिस्सों के पचास उद्धरण प्रस्तुत किये गए हैं। ये प्रलेख लगभग दो हजार वर्ष पूर्व गुफाओं में रख दिये गये थे तथा वर्ष 1947 और 1952 तक ये खोजे न जा सके।

वर्ष 1952 में विद्वानों की एक टीम इन प्रलेखों को एकत्र करके इस भौतिक वैभव का अर्थ लगाने के लिये नियुक्त की गई। पर विश्व में इसका प्रसार करने के स्थान पर इन्होंने इसे दबा लिया, केवल चुने हुए भाग ही छापे।

कैलिफोर्निया में हन्टिंगटन पुस्तकालय ने 1991 के अंत में यह एकाधिपत्य तोड़ा। पुस्तकालय ने घोषणा की कि यह इन प्रलेखों के फोटो प्रकाशित करेगा। ये फोटो पुस्तकालय को अधिकारियों से वर्ष 1967 के छह दिन के युद्ध के समय प्राप्त हुए थे। उन्होंने दलील दी कि इस अस्थिरता के समय इन प्रलेखों को प्रकाशित करना जोखिम का कार्य है। अतः वह फोटो सुरक्षित रखने के लिये अमेरिका में ही रखे जाएं। कैथोलिक तथा यहूदी विद्वान, जिन्होंने इन प्रलेखों पर एकाधिपत्य जमा लिया था, बहुत समय तक कहते रहे कि अप्रकाशित लेखों में दिलचस्पी का कुछ भी न था। उन्होंने कहा कि इनसे ईसाई धर्म के प्रारंभिक दिनों पर कोई प्रकाश न पड़ेगा। उन्होंने गलत कहा।

एक हिस्सा जिसकी संख्या 40266 है उसे आइनमैन तथा वाइज़ ने "धर्म परायणता की नींव" शीर्षक दिया।

ऐसा लगता है कि यह पॉल का ईसाई जाति से बहिष्कार था। यह प्रलेख ईसा के अनुयाइयों की ताजपोशी के लिये तथा पेन्टाकोस्ट के समय टोरा (मोजज़ के कानून) से बायें या दायें ओर चले जाने वाले लोगों को अभिशप्त करने के लिये बनाया गया था।

प्रलेख के कुछ हिस्से परमात्मा की प्रशंसा करते हैं। "आप ही सब कुछ हैं, आप ही के हाथ में सब कुछ है। आप ही ने लोगों को उनके परिवारों तथा राष्ट्रीय भाषाओं के अनुसार स्थापित किया है।"

प्रलेख के कुछ अंश परमात्मा की प्रशंसा करते हैं और मर्यादाओं "हमारे लिये बनी सीमाओं" के बारे में कहते हैं। जो इन सीमाओं का उल्लंघन करते हैं वे वह लोग हैं जिनकी आत्मा ने धर्मपरायणता की नींव को अस्वीकार कर दिया है।

पॉल ऐसा ही आदमी था। कहीं और उसे "मिथ्याभाषी शत्रु" "असत्य प्रसारक" जो "जन समूह के बीच में कायदे–कानून अस्वीकार कर देता है," "दुर्भाषी" और निन्दक" और "इसाइल पर झूठ का जल छिड़कने वाला विदूषक" कहा गया है।

पुस्तक के लेखकों का विचार है कि "बहुत से लोगों द्वारा मान्य धर्म नेता" जिसने यह बहिष्करण निर्णय सुनाया वह जेम्ज़ था। प्रायः "न्यायकारी जेम्ज़" के नाम से पुकारा गया यह धर्म प्रचारक, येरुशलम का मुख्य पादरी (बिशॅप) और ईसा का भाई था।

आशीर्वाद तथा अभिशाप लिप्त उल्टे सीधे तको द्वारा पॉल गलैशियन को लिखे अपने 3.11.1913 के पत्र में अपना बचाव करता है।

पॉल तर्क देता है कि ईसा की शिक्षाओं के विरुद्ध प्रचार के अपराध से वह मुक्त हो गया है क्योंकि कानून ने ईसा को अपराधी ठहराया था। पॉल मोजेज दन्त नियमों को रोमन कानूनों तथा अपने नियमों से उलझा रहा है।

धर्म शास्त्र के सिद्धान्तों में पॉल लिखता है कि प्रलेखों में वर्णित वार्षिक पेन्टाकोस्टल सभा में येरुशलम पहुंचने की जल्दी करो। आइनमैन और वाइज कहते हैं कि "एक्ट की पैन्टाकोस्टल की तस्वीर को आश्रय व्ययवाद की उल्टी तस्वीर के रुप में देखा जा सकता है।" अपने अंशदान को येरुशलम ले जाने के स्थान पर पाल का बहिष्कार उसी जाति से किया जाने वाला था जिस पर वह शासन करना चाहता था।

लेखक यह लिखते हुए समाप्त करते हैं कि "आशय अत्यन्त चौंका देने वाला और गहन है। एक बात निश्चित है : व्यक्ति को इन प्रलेखों में "पश्चिमात्य सभ्यता के लिये महत्वपूर्ण इस समय

में, चुपके–चुपके (ऊसर में) घटित होने वाली सभी बातों की जानकारी समयकालीन किसी भी अन्य प्रलेख से कहीं अधिक प्राप्त होती है।

माइकल बॉजेंट और रिचर्ड लेह द्वारा लिखित पुस्तक "दि डैड सी स्क्रोल्ड डीसैप्सशन" (कोर्गी पुस्तकों, लंदन–1991) से दो उद्धरण नीचे दिए गये हैं :–

"प्रभावशाली रुप से पॉल प्रथम इसाई विधर्मी है और.... उसकी शिक्षाएं–जो कि उत्तरकालीन इसाई धर्म की नींव बन गई–मूलभूत तथा पवित्र शिक्षाओं, जिनकी प्रशंसा सारे धर्माधिकारियों ने की थी, से लज्जाजनक विचलन (दूर हटना) है। 'ईसा का भाई जेम्ज़ वास्तव में ईसा का सम्बन्धी था या नहीं (हालांकि हर बात से पता चलता है कि वह था), यह स्पष्ट है कि वह ईसा को व्यक्तिगत रुप से जानता था। येरुशलम के प्राचीन चर्च, पीटर सहित जाति के सारे सदस्य भी ईसा को जानते थे। जब भी वे बोले तो पूर्ण अधिकार के साथ बोले। जिसे अपना उद्धारक समझा उस व्यक्ति से पॉल का कोई व्यक्तिगत परिचय न था। उसे रेगिस्तान में अर्ध–रहस्यात्मक अनुभव प्राप्त हुआ तथा देहमुक्त आवाज सुनाई दी। इस आधार पर अधिकार का झूठा दावा करना उसकी धृष्टता है। अपने व्यक्तिगत तथा स्वभावगत धर्म विज्ञान का प्रतिपादन तथा उसे जायज ठहराने के लिये और अप्रमाणिक रुप से इसे ईसा पर थोपने के लिये उसे ईसा की शिक्षाओं को बिगाड़ कर जनता की दृष्टि में अमान्य बनाना पड़ा।"

रहस्य के प्रकट होने के बावजूद भी आने वाली तीन शताब्दियों में नये आंदोलन की मुख्यधारा शनैः शनैः पॉल और उसकी शिक्षाओं में सम्मिलित हो गई। इस प्रकार जेम्ज और उसके साथियों के मरणोपरान्त भय के कारण एक पूर्णतया नये धर्म का जन्म हुआ–एक ऐसे धर्म का जिसका अपने कथित संस्थापक से कोई लेना–देना (सम्बन्ध) न था।"

(पृष्ठ 275)

जन कार्यक्रम

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन
स्काउट एवं गाइड मैदान, दिल्ली–22.3.93

सहजयोग का ज्ञान सूक्ष्मज्ञान है और सूक्ष्मज्ञान को प्राप्त करने के लिये, हमें भी सूक्ष्म होना है। ये सूक्ष्मता क्या है कि हमें आत्मा स्वरुप होना चाहिये। आत्मा से ही हम इस सूक्ष्म ज्ञान को समझ सकते हैं। क्योंकि आत्मा का अपना प्रकाश है और वो प्रकाश जब हमारे ऊपर प्रगटित होता है तो उस आत्मा के प्रकाश में ही हम इस सूक्ष्मज्ञान को जानते हैं। ये हमारे ही अन्दर की आत्मा है। ये परमात्मा का प्रतिबिम्ब हमारे ही अन्दर आत्मा स्वरुप है और कुण्डलिनी परमात्मा की इच्छा शक्ति आदि शक्ति का प्रतिबिम्ब है। कुण्डलिनी साढ़े तीन वलयों में है जिन्हें कुण्डल कहते हैं इसलिये उसका नाम कुण्डलिनी है। कुण्डलिनी जब उठती है तो ये साढ़े तीन कुण्डल पूरे के पूरे नहीं उठते। जैसे कि रस्सी में बहुत से धागे बंधे रहते हैं उसी प्रकार इस कुण्डलिनी में भी बहुत से धागे हैं। उनमें से कुछ धागे ऊपर उठते हैं और आपके तालू, संस्कृत में तालव्यय, का छेदन करती हुई ये कुण्डलिनी सूक्ष्म शक्ति में पहुंच जाती हैं जो चराचर में फैली हुई है। जब इस सूक्ष्म शक्ति में इसका योग हो जाता है। तो आत्मा का जो पीठ है वो यहां सिर है सारे चक्रों के पीठ सब सिर में है। सारे चक्र हमारे अन्दर हैं। तो ये जो कुण्डलिनी शक्ति आपके अन्दर जो जागृत हो गई इसके ज्यादा से ज्यादा धागे ऊपर उठने चाहिएं। तो सबसे पहला अनुभव जो आपको प्राप्त होता है वह है निर्विचारिता। निर्विचार समाधि। समाधि को अंग्रेजी में Awareness (बोध) भी कहते हैं। समाधि अर्थात समा–गयी बुद्धि। तो इस योग में इस नये आयाम में, इस नई धारणा में इस ब्रह्म चैतन्य में जब बुद्धि समाती है तो इसे समाधि कहते हैं लेकिन समाधि सर्वप्रथम आपको निर्विचार समाधि के रुप में प्राप्त होगी। हठात आप देखेंगे आप निर्विचार हो गए। अब जब हम विचार करते हैं तो हम या तो आगे का विचार करते हैं भविष्य का या तो पीछे का यानि भूत का। लेकिन आज अभी इस वक्त वर्तमान है। वर्तमान में हम खड़े नहीं हो सकते और जब तक हम वर्तमान में नहीं रहेंगे तब तक हमारी आध्यात्मिक उन्नति हो नहीं सकती। क्योंकि जो पीछा (गत) था वो तो खत्म हो गया और आगे का तो अभी है ही नहीं। पता नहीं क्या है। तो वर्तमान ही असलियत है। पर इसमें बुद्धि ठहर नहीं सकती। इसमें मन ठहर नहीं सकता। तो ये विचार लहरों जैसे उठते हैं। फिर गिरते हैं। पूरे समय हम इसी आंदोलन में कूदते रहते हैं कभी इसके शिखर पे, इसके कास्प पे दोड़ते रहते हैं। आज ये विचार आया। कल ये विचार आया तो परसों ये विचार आया। लेकिन जब कुण्डलिनी आपकी चढ़ती है तो क्या होता है कि विचार कुछ लम्बा हो जाता है। इन दोनों विचारों के बीच में जो स्थान है उसे विलम्ब कहते हैं। इस विलम्ब स्थिति में आप आ जाते हैं और विलम्ब की स्थिति जो बहुत संकीर्ण होती है वो बढ़ जाती है। ये ही वर्तमान है। इसलिये आप निर्विचार हो जाते हैं। लेकिन समाधि माने पूरी तरह से सतर्क है, बेसुध अवस्था में नहीं जाते। आप सुप्ता अवस्था में नहीं जाते। जरुरत से ज्यादा सतर्क हो जाते हैं। लेकिन कोई विचार आपके अंदर नहीं आता। बस सब चीज देखना मात्र बनता है। इसे साक्षी स्वरुप कहा गया है तो आप देखते मात्र हैं। उसका कोई भी असर आप पे नहीं आता। उसकी क्रिया, प्रतिक्रिया कुछ नहीं आता। आप पूरी तरह से उस चीज को देखते हैं। ये निर्विचार समाधि की पहली स्थिति है। इस स्थिति को पहले बनाना होगा। अब जैसे यहां पर एक बड़ा सुन्दर सा गलीचा बिछा हुआ है। अगर मैं विचार में हूं तो मैं ये सोचती रहूंगी कि ये कितना सुन्दर है। ये कहां मिलता है। ये कितने पैसे का है कौन सी दुकान से खरीदा। ये सब विचार सर को खाएंगे। दूसरे अगर ये मेरा है तो और भी सिरदर्द, ये खराब न हो जाए। इसका बीमा कराया नहीं। अब कैसे होगा, क्या होगा। ये मानवीय दिमाग है। लेकिन दैविक शक्ति में आदमी ये सब सोचता नहीं, देखता मात्र है और देखता क्या है कि इसका सौन्दर्य क्या है। जिस कलाकार ने इसे बनाया उसने इसमें जो कुछ भी सौन्दर्य डाला, जो उसने अपने हृदय का आनन्द इस सौन्दर्य से प्रगटित किया है, उसको दिखाया है, दर्शाया है तो सारा आनन्द निर्गुण में ही आपके अन्दर उतरने लग जायेगा और ऊपर से नीचे तक आपको ठंडा करता हुआ चला जाएगा। तो इसका जो बनाना है जिसने बनाया है, इसका जिसने सृजन किया उसका भी कार्य पूर्ण हुआ और हमारे लिये भी इतनी बड़ी बात हो गई कि बगैर सोचे–समझे हमने इसका आनन्द पूरे रुप में उठा लिया। इस प्रकार आप निर्विचार समाधि में उतर गए। ये आपको शांति प्रदान करती है। निर्विचार समाधि आपको शांति प्रदान करती है और आपकी आध्यात्मिक शक्ति बढ़ती जाती है। जब आपकी आध्यात्मिक शक्ति बढ़ जाती है तो आपकी सृजन शक्ति भी बढ़ जाती है। ये हमारा हुआ या नहीं हुआ इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। और बढ़ी हुई सृजन शक्ति से आप अनेक विधि

कार्य कर सकते हैं। हठात उसमें कोई मेहनत नहीं। Spontaneous सहज। जैसे एक साहब हैं, जो बड़े गणितज्ञ थे और उनको भाषा में कोई खास दखल नहीं था। भाषा कोई जानते नहीं थे। वो सहज में आए और कविताएं बनाने लग गए। हिन्दी में भी और उर्दू में भी, मराठी में भी, अंग्रेजी में भी कविता करने लगे। तो ये कोई चेष्टा नहीं है। ये आप ही के अन्दर छिपी हुई एक शक्ति है। उसने जब आपको छू लिया तो अनायास, सहज ही में आप सृजन करने लगे। ऐसे अनेक तरह के कवि हमारे यहां हो गए। अनेक तरह के कलाकार हो गए। अपने हिन्दुस्तान के बहुत बड़े–बड़े लोग, माने हुए कलाकार सहज के ही माध्यम से हुए हैं। कलाकार अमजद अली साहब हैं, अल्लाहरक्खा के लड़के हैं। देबू चौधरी साहब हैं, और न जाने कितने ही लोग हैं जिनको कि सहजयोग से फायदा हुआ। और वो कहते हैं कि आपके सामने बैठने से ही हमारा हाथ एकदम से चलने लग जाता है। समझ में नहीं आता। जो राग कभी बजाया नहीं वो भी हम बजाते हैं। इस तरह से बहुत से लोगों को इसका एक अजीब तरह का फायदा हुआ जो बहुत साल गुरुओं के पास मेहनत करने से भी नहीं हुआ। उनकी जो शक्ति थी वो जागृत हो गई। सृजन शक्ति उस सृजन शक्ति के भरोसे, न जाने वो कहां से कहां पहुंच गए। तो आपके अन्दर की सृजन शक्ति बहुत बढ़ जाती है। अब कल चक्रों पे जब हम बात करेंगे तब आपको बताएंगे कि हर एक चक्र में, कौन–कौन सी शक्तियां हैं और जो आपको प्राप्त होती हैं। आप जानते हैं कि यहां पर डाक्टरों का एक सम्मेलन हुआ था जिसमें आप लोग भी काफी आए थे और कुछ लोग नहीं भी आए थे। ये बात सच है कि कुण्डलिनी के जागरण से आपकी तन्दरुस्ती बिल्कुल ठीक हो जाती है। अधिकतर लोगों की ठीक हो जाती है। अब बिल्कुल ही मरने को आप हुए तो भगवान कहता है कि इस बार मरने दो, फिर जन्म ले लेंगे कोई बात नहीं। और कुछ–कुछ लोग इतने बेकार होते हैं कि भगवान सोचते हैं कि ऐसे बेकार लोगों को क्या फायदा है ठीक करने से क्योंकि ये तो वो दीप हैं जो कभी जलेंगे ही नहीं तो उनको ठीक करने से फायदा क्या? लेकिन अधिकतर लोग हर तरह की बीमारी से ठीक हो जाते हैं। बड़े आश्चर्य की बात है। यानि कैंसर, बहुत लोगों का ठीक हुआ है। और ऐसी हालत में ठीक हुआ है कि डाक्टरों ने घोषित कर दिया कि आठ दिन में मर जायेंगे। अब वो जिंदा बैठे हैं आठ–आठ, नौ–नौ साल बाद। ये कैसे हुआ। आप कहेंगे ये सब कैसे हुआ। ये समझने की बात है कि ये कैसे हुआ। हमारा शारीरिक, मानसिक, भौतिक सारा अस्तित्व ही चक्रों पर है। वो ही हमारे मूलतः शक्ति दायक स्रोत है मान लो आपके चक्र खूब काम कर रहे हैं, आपका अनुकम्पी नाड़ी तंत्र खूब काम कर रहा है। इस्तेमाल करते–करते इसमें संकीर्णता आ गई। चक्रों में संकीर्णता आते ही या तो इनकी शक्ति खत्म हो जाएगी या फिर ये टूट जाएंगे। टूटते ही आपका सम्बन्ध जो आपके सम्पूर्णता से है, आपके मस्तिष्क से वो टूट गया। फिर हो गये आप अलग। एकाकी हो गए। इसे कहते हैं Melignant । कैंसर आपके अन्दर हो गया। अब कुण्डलिनी क्या करती है जैसे कोई धागा हम मोती में पिरोते हैं उसी तरह से धीरे–धीरे वो हर एक चक्र में बायां, दायां दोनों में गुजरते हुए और सीधे यहां से निकल जाती है। उससे वो चक्र जो हैं वो फिर से प्लावित हो जाते हैं। पुष्ट हो जाते हैं। प्लावित होने पर उनके अंदर शक्ति आ जाती है। एक साथ जुड़ जाने के साथ उनका संबंध मस्तिष्क से भी हो जाता है और परम चैतन्य से भी हो जाता है। एक बार ये संबंध पूरी तरह से हो जाए उसके बाद कोई बीमार नहीं पड़ सकता। अगर कोई सहजयोगी है, तो उसको कोई बीमारी नहीं। ऐसे बहुत से हैं। सब बीमार नहीं आते हैं सहजयोग में। ऐसे भी लोग हैं जो बिल्कुल स्वस्थ हैं। ये तो बढ़िया लोग होते हैं। क्योंकि जैसे ही वो पार हो जाते हैं जैसे ही उनको कुण्डलिनी का आशीर्वाद मिल जाता है ऐसे ही उनकी प्रगति ज्यादा जोरों से होती है और उसके बाद उनको कोई भी बीमारी नहीं होती। हमारे यहां बहुत से ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि पहले हमें जुकाम भी होता था तो डाक्टर के पास जाते थे और अब किसी को अगर कैंसर हो जाए वो हमारे पास आते हैं। सो आप ही डाक्टर बन जाते हैं। आप डाक्टर बन जाते हैं खुद आप अपनी बीमारी समझते हैं। क्योंकि जब कुण्डलिनी सहस्रार को भेदती है तो अपने आप महसूस होती है ठंड़ी–ठंडी हवा। और ये सात चक्र हैं इन चक्रों पर आप जानते हैं कि आपका कौन सा चक्र खराब है और दूसरों का कौन सा चक्र खराब है। अगर आप समझ लें कि किस तरह से इस चक्र को ठीक करना है आप अपने भी चक्र ठीक करिये और दूसरों के भी ठीक करिये। इससे पहले तो आपको अपने चक्र ही महसूस ही नहीं होते थे। अब आपको अपने चक्र महसूस होंगे और इसी को हम कहते हैं अपना ज्ञान। स्वयं का ज्ञान। जब अपने चक्रों के बारे में आपने सब कुछ जान लिया तब फिर आप अपनी तन्दरुस्ती अच्छी रख सकते हैं। दूसरे किसी के चक्रों को गर आपने जान लिया तो आप दूसरों की भी तन्दरुस्ती अच्छी रख सकते हैं। और अब आप बात चक्रों की करते हैं। आपकी भाषा चक्रों की होती है। आप यह नहीं कहते कि ये मुसलमान है, ये हिन्दू है, ये ईसाई है। यह नहीं कहते। आप यह नहीं कहते कि ये अंग्रेज हैं कि ये हिन्दुस्तानी हैं या कोई और। आप यह नहीं कहते कि इसके बाल सफेद हैं कि काले हैं। कि इसने सूट पहना है कि कुर्ता–पाजामा पहना है यह नहीं कहते। ये सब बाह्य

के आडंबर हैं। आप सिर्फ यह कहते हैं कि मां इसके ये चक्र गडबड़ हैं। आप सिर्फ चक्रों की बात करते हैं। कौन सा चक्र खराब है उसकी आप बात करते हैं। उसी तरफ आप का चित्त जाता है। उस चक्र को कैसे ठीक करना है वो आप सीख लीजिये। हो गया काम खत्म।

अब परमात्मा को पैसा–वैसा समझ में नहीं आता। ये बैंक और पैसा। सिरदर्द। ये मनुष्य ने बनाया है। इसका सम्बन्ध भगवान से है ही नहीं। कैसे हो सकता है। बताइये। अजीब सी ये संस्थाएं हैं। कुछ समझ में नहीं आती मेरे भी। तो इसके लिये आप पैसा–वैसा नहीं दे सकते। यह तो जीवन्त क्रिया है। आप अपने पेट को कितना पैसा देते हैं कि वो पचन करते हैं आपके खाने को! या इस हाथ को कितना आप रुपया देते हैं जो आपका सारा काम करते हैं! इसी प्रकार इसके लिये पैसा मांगने वाले को समझ लीजिए इससे बढ़कर पाखंडी कोई नहीं। एक तो भगवान का काम करते हैं और ऊपर से पैसा लेते हैं। ये भगवान का काम नहीं कर सकते क्योंकि भगवान को तो पैसा समझ में नहीं आता। अपने दिमाग से यह बात निकाल दीजिए कि आप भगवान के नाम पर पैसा दे सकते हैं। हां ठीक है यह मंडप बनाया इसका पैसा दो। ठीक है आप हवाई जहाज से आये हैं इसका पैसा दो। ये सब भौतिक चीजों का पैसा दे सकते हैं। लेकिन परमात्मा के कार्य का आप पैसा नहीं दे सकते। तो ये जो आपके अंदर आंतरिकता से एक चोज आ जाती है इसे कहते हैं सामूहिक चेतना। माने दूसरों के प्रति चेतित होते हैं। आपको महसूस होता है इनका ये चक्र पकड़ा है। अब एकदम अंदर से ऐसी अनुकंपा आयेगी कि चल भई इसको ठीक कर। दो चार सहयोगियों को फोन करके, सब लग जायेंगे उसके पीछे। अरे भई कुछ तुमने अपना रक्षण किया है। कुछ अपनी ओर नजर की या लग गये। इतनी अनुकंपा बहती है लोगों की कि कुछ पूछो मत। मुझे फोन पर फोन करेंगे कि मां फलांना बड़ा बीमार है। अरे भई वो सहजयोगी है क्या। नहीं–नहीं मां वो है तो नहीं पर अच्छा आदमी है, शरीफ है बेचारा, अच्छा आदमी है, आप जरा चित्त दीजिये। उसको ठीक करना है। ऐसी अनुकंपा बहती है। अनुकंपा में लड़ाई–झगड़े का क्या सवाल उठता है। अभी मैं मजार पर गई थी निज़ामुद्दीन साहब के। वो भी बहुत बड़े औलिया थे। हम मानते भी बहुत हैं उनको। हम सबको मानते हैं। हम गुरू नानक साहब की भी पूजा करते हैं। मोहम्मद साहब की भी हम पूजा करते हैं। दोनों एक ही चीज हैं। आप समझें या न समझें। बेकार में लड़ाई–झगड़ा कर रहे हो असल में सब एक ही हैं। बहरहाल वहां भी मुझे आश्चर्य हुआ। वहां भी राजकारण चल रहा है। अरे भई जिसके दरवाजे बैठे हो वहां राजकारण क्या कर रहे हो। सहजयोग में राजकारण नहीं चलता। ऐसे शुद्ध बनो। जब तक मन शुद्ध नहीं हुआ तब तक क्या फायदा है। धर्म कर्म करने से कोई फायदा नहीं। एक दम शुद्ध मन हो गया। शुद्ध मन से सिवाय अनुकंपा के कुछ और नहीं बहता। सबके लिये दिल बहने लगता है। दिल इतना बड़ा हो जाता है किसके लिये क्या करें? उसके लिया क्या करें? अब यह सोचें कि यहां इतने अंग्रेज बैठे हैं। एक जमाने में इनके बाप–दादा, ये तो नहीं, यहां पर राज करते थे। काफी दुष्टता की उन्होंने। आज जब ये अंग्रेज आते हैं आपके बंबई में या दिल्ली के एयरपोर्ट पर तो आपकी जमीन को चूमते हैं, नमस्कार करते हैं। कहते हैं कि योग–भूमि है। ये इन्होंने जाना क्योंकि इनके पास वो सूक्ष्म ज्ञान है। अब पूछिये कि ये निज़ामुद्दीन साहब वास्तव में औलिया थे कि नहीं? एक सवाल पूछियेगा। फौरन हाथ में लहरियां शुरू हो जायेंगी। नानक साहब आदि गुरू थे या नहीं? पूछिये देखिये ऐसे हाथ करके पूछिये कोई सा भी सवाल। परमात्मा है कि नहीं, पूछिये। जो सच्ची बात होगी वो आपको लहरियां देगी, अगर झूठ बात होगी तो गर्मी देगी, कुछ–कुछ में तो थोड़े फफोले भी हो जायेंगे। आपमें सामूहिक चेतना जागृत हो जाती है। उसके कारण आपके अंदर जो अनुकंपा है वो बहने लग जाती है। तीसरी चीज जो होती है उसमें आपको केवल सत्य पता होता है। पूर्ण सत्य। ये क्या होता है। जैसे मैंने कहा कि पता करिये। जेल से छूटने के बाद कोई अपराधी गेरुए कपड़े पहन कर यदि आपके सामने खड़े हो गये तो हो गये साधू बाबा। कुछ जादू मंतर किया कुछ ये वो किया। लोग हो गये पागल उनके पीछे। हाथ ऐसे करके पूछिये फलाने ये गुरू हमारे हैं ये सच्चे हैं कि झूठे। फौरन आपको पता हो जायेगा। अगर 10 साक्षात्कारी बच्चों को आंखों पर पट्टी बांध कर उनसे पूछिये कि बेटे इस आदमी को क्या तकलीफ है सब एक ही ऊंगली दिखायेंगे। सब चीज आपको हाथ पर ही पता चलेगी। रोग निदान करने की जरुरत नहीं। एक साहब बोस्टन गये थे। कहने लगे निदान करते–करते मैं मर गया। पैसे के पैसे लग गये। इन्होंने तो मेरी अंतड़ियां निकाल करके निदान किया। यहां बाहर ही से आप निदान कर लेंगे कि किसकी क्या तकलीफ है। क्या शिकायत है। और घबड़ाने की कोई बात नहीं क्योंकि ये ठीक सब ठीक हो सकता है। शारीरिक ही नहीं, मानसिक, बौद्धिक और सबसे बड़ी बात है आध्यात्मिक। गलत–गलत गुरूओं के यहां गये। हमारे तलवार साहब से पूछिये वो बतायेंगे किस्से गुरुओं के। कैसे चक्करों में डालते हैं। और इन्सान बहकता ही रहता है। अब तो हमने उनको मान लिया। अरे भई क्यों माना? उन्होंने तुमको क्या दिया? हम तो माँ हैं हम तो पूछेंगे कि बेटे तुमको तुम्हारे गुरु ने दिया क्या? क्यों माना तुमने उनको? कुछ तुमको दिया है। और

तुमने जाना कैसे कि वो असली हैं या नकली। रुपया पे रुपया चढ़ा रहे हैं। कितना बताया कितना समझाया बहुत नाराज होते थे लोग मेरे से। ठिकाने पर आये। तो उस वक्त आपको केवल सत्य पता होता है। आप आदमी को देखकर बता सकते हैं कि कौन से गुरू से चला आ रहा है। क्योंकि हरेक गुरू ने कोई न कोई एक चक्र पर काम किया होता है। आप फौरन बता सकते हैं कि ये कौन से गुरू से चला आ रहा है। और ऐसे ये गुरू भागते हैं और इनके शिष्य भी क्योंकि सत्य को झेलना बहुत कठिन बात है इन लोगों के लिए। अब इसमें आप अपने ही गुरू हो जाते हैं। जो बड़े–बड़े महान गुरूओं ने कार्य किया है वो सबसे बड़ा यह है कि हमारे अन्दर ऐसी शक्ति बसा दी है कि हम अपने गुरू हो सकते हैं। आप खुद ही अपने को बताते हैं कि भाई देख ये रास्ता ठीक नहीं इधर मत चल, इधर चल। वो सत्य विवेक बुद्धि जो कहती है वो सत्य विवेक बुद्धि हो जाती है। असत्य रह ही नहीं जाता। अपने आप ही आप छोड़ देते हैं। मैं किसी से कुछ नहीं कहती। ये नहीं कहती कि शराब मत पियो। कुछ नहीं कहती क्योंकि दिल्ली में अगर ऐसा कहो तो आधे लोग उठ कर चले जायेंगे। सब जाति के लोग शराब पीते हैं। हालांकि मना है सब पीते हैं। लेकिन सहजयेग में आने के बाद मैं कहती हूं कि जाओ शराब की दुकान पर। कोई शराबी दिखाई दिया तो दूसरा रास्ता काट लेंगे। और शराब की दुकान देखी तो अपना घर हटाकर दूसरी जगह चले जायेंगे। क्योंकि अंदर प्रकाश आ गया ना। बाहर कुछ नहीं। सब ड्रग्स छूट गये, शरावें छूट गई वो सारा जो क्लब जीवन था ये वो था जिससे कि मनुष्य का सर्वनाश होता है सब छूट गया। ये सारे कार्य सर्वनाश की ओर ले जाते हैं। लेकिन न जाने मनुष्य ऐसा क्यों करता है। लंदन में हम रहते थे कि देखा एक इंसान बड़े जोरों से चला जा रहा है मोटर लिये। पता नहीं इसको काहे की जल्दी हो रही है? रुककर देखा कि कहां जा रहा है तो एक पब के सामने खड़े हैं। दो चार अंदर से आकर नीचे गिरे हुए थे रास्ते पर बेहोश और ये उसी के लिये दौड़े चले आ रहे हैं कि मैं क्यों नहीं बेहोश हुआ। अक्ल मारी जाती है ना, जिसको मत (बुद्धि) मारना कहते हैं बिल्कुल अक्ल मारी जाती है। और चाहे वो सिख हो चाहे वो मुसलमान हो, चाहे वो ईसाई हो बड़ी शान से अपनी बार दिखाते हैं, बार, घर के अंदर और वहीं सबके फोटो लगे हुए हैं। ये धर्म नहीं है।

अंदर बाहर एक ही जानो ये अपने आप ही हो जाता है। मुझे कहने की जरुरत ही नहीं है। आप अपने ही गुरु हो जाते हैं। आप अपने ही आप ठीक हो जाते हैं मुझे कहने की कोई जरुरत ही नहीं। आज मैने कह दिया इसका मतलब नहीं कि आप छोड़छाड़ के भागिए। यह सब गंदी आदतें छूट जायेंगी। अब मैं इश्तिहार देखती हूं शराब के खिलाफ इतना लिखा हुआ। इससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। लोग शराब पीते–पीते भी वही इश्तिहार बोलते रहते हैं। फिर हमारे यहां जो आजकल आधुनिक तरह की संस्कृति आ रही है इससे बहुत बचकर रहना चाहिए। इन लोगों की तो वहां बेचारों की खोपड़ी खराब कर दी है। सत्यानाश कर दिया। इनके घर–द्वार छूट गये। एक–एक औरत आठ बार शादी करती है तो एक–एक आदमी नौ बार शादी करता है। ना घर ना द्वार, ना बाल ना बच्चे। सब अनाथाश्रम में रहते हैं। दूसरे जो कुछ बच भी गये हैं वो एडस से मर रहे हैं। उससे बच गये तो वहां और पचासों बीमारियां आ गई। अब एक नई बीमारी आई है। जो लोग बहुत काम करते हैं इनका जो चेतन मस्तिष्क है वही नहीं काम करता और वो हकबल हैं जैसे कि कोई बड़ी भारी मछली या सांप हो इस तरह से उनको कंधे पर लादकर घुमाते हैं। दिमाग चलता है। बाकी कुछ नहीं हाथ नहीं चल सकते, पैर नहीं चल सकते, शरीर नहीं चला सकते। ये भी मैनें बताया था कि होने वाला है। एडस भी बताया था। पर सब बड़े गुस्से होगये थे। अब जब हो गया है तो बैठे हुए हैं। और गंदी–गंदी जगह दिमाग जाना और गंदी–गंदी बात सोचना। अपने बच्चों की भलाई नहीं सोचते कि बच्चों का क्या होगा। अब सिनेमा में भी यही है। उसमें भी यह कुछ अच्छी बातें सिखाते नहीं। कम से कम हिन्दुस्तानी फिल्मों में यह नहीं दिखाते कि कोई बुरा आदमी हीरो हो गया है। वहां तो बुरा आदमी ही हीरो होता है। पर तो भी अपनी फिल्मों में भी ये कितनी गंदी–गंदी बातें सिखाते हैं बच्चों को। मार–पीट ये वो। अरे जब बच्चों को मार–पीट सिखाओगे तो शांति कहां से रहेगी देश में। इस प्रकार एक तरह से हमारे ऊपर आक्रमण आ रहा है। एक नये तरह का इन विदेशियों का। इधर आप जरुर ध्यान दीजिये। अपने बच्चे भी वैसे कपड़े पहनने लग गये। उसी तरह से जवाब देने लग गये। इसी तरह से उनका रहन–सहन भी हो रहा है और डिस्को–विस्को में जाने लग गये चोरी–छिपे। और वहां बदमाशी कर रहे हैं। इस तरफ सतर्क होना पड़ेगा। जो बच्चे एक बार सहजयोग में आ गये उधर मुड़कर भी नहीं देखते। उनको अच्छा ही नहीं लगता। उसका शौक ही नहीं चढ़ता। आपके सामने ऐसे बहुत से बच्चे आयेंगे आप देखियेगा। सहजयोग में आप खुश हो जायेंगे। इन सब चीजों से अपने को बचाना है। अब बचाने के लिये एक ही मार्ग है कि हमीं अपने गुरू हो जायें। उस गुरूतत्व से आप समझ जायेंगे कि आपके लिये भलाई क्या है, अच्छाई क्या। आपकी फैमिली के लिये क्या अच्छा है। आपके घर वालों के लिये क्या अच्छा है। आपके रिश्तेदारों के लिये क्या अच्छा है। इस देश के लिये क्या अच्छा है। उसी ओर आप बढ़ें। इस प्रकार सहजयोग में आने से

आपमें वो सूक्ष्मता आ जायेगी। और वह सूक्ष्म शक्ति जो कि सारे ही जीवन्त कार्य करती है। हम सोचते भी नहीं कि दिल क्यों धड़कता है। अनहद कह दिया अनहद है। पर कौन अनहद है। कौन अनहद है ये दिल को चलाने वाला? कौन है जिसने इन्सान को बना दिया? और किसलिये बनाया है? यह सारा कुछ मतलब आपको सहजयोग में मिल जाता है। और अब आप जानते हैं कि आपके जीवन का अर्थ क्या है। क्यों आप इस संसार में आये। क्यों आपने मनुष्य रुप धारण किया। इस वक्त आप समझते हैं कि आप कितने गौरवशाली हैं और कितने विशेष हैं। अब समझ लीजिये कि अगर कोई आप देहात में टेलीविजन ले जाइये और कहिये कि इसमें हर तरह का ड्रामा, हर तरह की चीज आयेगी। वो कहेंगे कि क्या बकवास कर रहे हो ये तो डिब्बा पड़ा हुआ है। डब्बा। ऐसे हम भी अपने को एक डब्बा समझते हैं। ये बात नहीं। बहुत बढ़िया तरीके से बनाया गया है ये डब्बा। इसमें सूक्ष्म तार ऐसे गिने हुए हैं और वे सूक्ष्म तार जैसे के तैसे रक्खे हुए हैं। उन्हें कोई छू नहीं सका अभी तक। वही सूक्ष्म तार छेड़ने की बात है। पर जैसे ही आप इस टेलीविजन का कनैक्शन लगा दीजिये वो हैरान कि अरे वाह ये क्या चीज है। ऐसे ही आप लोग भी हैं और आप अपने को जानिये और जानने के बाद आप समझ जायेंगे कि आप क्या हैं। बगैर अपने को जाने हुए चाहे आप सोचें कि आप लाट साहब हैं तो वो भी गलत है। और चाहे आप सोचें कि आप कुछ नहीं तो वो भी गलत है। पहले अपने को जान लीजिए। और जब जाना जाता है तो दिया भी जाता है। जब तक दीपक में प्रकाश नहीं होता, उसको जलाया जाता है और जब वो जल जाता है तो वो सबको प्रकाश देता है क्योंकि ये इसका कार्य है। इसी प्रकार एक दीप से अनेक दीप जलाने की जो बात है, उसका साक्षात सहजयोग है। इसमें से बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्होंने पहले मुझे देखा भी नहीं और जागृत हो गये। कैसे? एक सहजयोगी गये उन्होंने किया। और प्रदेश में यह काम बड़े जोरों से हो रहा है। रूस में लोग आप आश्चर्य करेंगे कि साइबेरिया के मरुस्थल में जाकर वहां काम किया। साइबेरिया में भी सहजयोग चलाया। बड़े आश्चर्य की बात है कि ये लोग कैसे साइबेरिया गये। पिछली मर्तबा जब में रूस गई तो एयरपोर्ट पर हजारों लोग थे। तो जब सामने आये तो मैंने कहा कि ये कहां से आये। साइबेरिया से। कहने लगे कि माँ 50 आदमी आये हैं साइबेरिया से। साइबेरिया में लोगों को सजा देने के लिये भेजते थे। जैसे अन्डेमान-निकोबार। हां अन्डेमान-निकोबार में भी सहजयोग चल पड़ा है। आपको आश्चर्य होगा कि जहां यह बीज चला जाता है उस आदमी को चैन ही नहीं पड़ता सहजयोग दिए बिना। अकेले कैसे रहें। माँ हम तो अकेले हो गये यहां कैसे सहजयोग करें। सहजयोगी बनाओ सहजयोगी। और हिम्मत की बात है। इस पर बस अहंकार नहीं आना चाहिए। हिम्मत होनी चाहिए। हर आदमी हजारों आदमियों को पार कर सकता है। अब हमारी उम्र हो गई आप जानते हैं लेकिन कोई हर्ज नहीं। आप लोग तो हैं। आप लोग तो हमारा कार्य करेंगे ही। और हमें पूर्ण आशा है कि सहजयोग दुनिया की रंगत ही बदल देगा। आज न जाने क्यों मुझे दुनिया ही अलग नजर आ रही है। कुछ फर्क ही नजर आ रहा है। न जाने क्यों? क्या हो गया है सब कुछ अलग ही अलग दिखाई दे रहा है। और बड़ी शांति सी लग रही है अंदर में। हो सकता है कि वाकई में सतयुग का ऊषा काल आ गया है उसकी प्रभात आ गई है। सारे ही धर्म, उसके संस्थापक एक ही पेड़ पर पैदा हुए फूल थे मैंने कहा। लेकिन हमने ये फूल तोड़ लिये हैं और लड़ रहे हैं कि ये हमारा है हमारा है। सहज के सागर में सारे ही समा जाते हैं और सबको की हम पूजते हैं। समोभाव नहीं है समश्रद्धा भी नहीं कहना चाहिए पर पूजा सबकी होती है। ये हुए बगैर हम लोग वो नहीं जान सकते कि हम सब एक हैं। कोई फर्क नहीं, हमारे में। आशा है कि जो नये लोग आये हैं सहजयोग की प्रणालियां सीख लेंगे। कल भी मैं चक्रों पर बात करुंगी। एक-एक विषय पर बातचीत होगी।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

श्री माता जी द्वारा नियुक्त की गई समितियां

सभी केन्द्र इन समितियों को बढ़ावा दें

(1)

राष्ट्रीय मुख्य समिति

उद्देश्य : सारी समितियों के कार्य तथा उनके नियन्त्रकों का निरीक्षण करना

(2)

प्रदूषण समिति

उद्देश्य :

1. प्रदूषण को समाप्त करना तथा पर्यावरण सन्तुलन बनाये रखना
2. बाग, पेड़ तथा जंगल लगाना
3. सफाई :

(अ) आसपास की
(ब) निजी
(स) सामुहिक

4. प्राकृतिक तथा हस्तकला की वस्तुओं का उपयोग। प्लास्टिक की वस्तुओं से बचना।

(3)

कृषि समिति

उद्देश्य :

(1) चैतन्य लहरियों के उपयोग से उपज को बढ़ाना।
(2) शोध कार्य।
(3) कृषि उद्योग आरम्भ करना।
(4) कृषि प्रयोग करना तथा उन्हें लिखना।

(4)

औषधालय समिति

उद्देश्य :

(1) वाशी हस्पताल की देखभाल।
(2) शोध कार्य।

(5)

रोग–मुक्ति समिति (स्थानीय)

उद्देश्य :

1. व्यक्तिगत रुप से कोई व्यक्ति रोगियों को ठीक करने का प्रयास न करे। श्री माता जी के फोटो के सामने निर्धारित सहजयोग इलाज द्वारा रोगी स्वयं अपना इलाज करें।
2. रोग मुक्त हुए लोगों के रोग के पूर्ण इतिहास समेत उनका विवरण रखना।
3. ठीक होने के पश्चात रोगी का वक्तव्य लिख लिया जाये कि वह सहजयोग द्वारा ठीक हुआ है।

(6)

विवाह समिति (राष्ट्रीय)

उद्देश्य :

1. विवाह के प्रार्थनापत्रों की छानबीन करना।
2. प्रार्थियों के कथन का सत्यापन करना। उन्हें सहजयोग में आए कम से कम दो वर्ष हो चुके हों।
3. सहजयोग में विवाहित दम्पतियों से जन्मे बच्चों की सूचना तथा उन्नति का विवरण रखना। हर विवाह से कितने बच्चे हुए।

(7)

व्यक्तित्व विकास समिति

उद्देश्य :

1. सहजयोगियों के आचरण, व्यवहार–वैचित्र्य, वेषभूषा का ध्यान रखना।
2. वस्त्र हास्यास्पद नहीं होने चाहिएं। भारतीय वेषभूषा की सिफारिश की जाती है। दफ्तरों में चूड़ीदार पायजामे तथा जोधपुरी कोट पहन सकते हैं। जीन पहनना वर्जित है।
3. महिलाएं पाश्चात्य फैशन में बाल न बनवाएं तथा अत्यधिक श्रृंगार न करें। योगी गरिमामय तथा सम्मानीय लगने चहिएं।
4. यह देखना कि हर व्यक्ति सहज संस्कृति के नियम तथा सामाजिक आचरणों का पालन करे।
5. हर व्यक्ति को सहज भाषा का ज्ञान हो। अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषा का ज्ञान होना चाहिए। महाराष्ट्र में रहने वाले लोग मराठी सीख सकते हैं।

(8)

साहित्य समिति (राष्ट्रीय)

उद्देश्य :

1. श्रेष्ठ प्रेरणा प्रदान करने वाले, मानवता का पोषण करने वाले अन्तस की सूक्ष्म वास्तविकताओं को बाहर लाने वाले, चारित्रिक मूल्यों और देवी विचारों तथा आत्मोत्थान की अभिव्यक्ति करने

वाले उदारता पूर्ण साहित्य को प्रोत्साहन देना।

2. इस प्रकार की पुस्तकों का पुस्तकालय वाशी में बनाना।
3. सहजयोगी ऐसी पुस्तकें पढें तथा साहित्यिक सुरुचि स्वयं में स्थापित करें।
4. पुस्तकों को लिखने तथा प्रकाशन की स्वीकृति देना। कोई भी पुस्तक या पत्रिका इस समिति की आज्ञा के बिना प्रकाशित नहीं होनी चाहिए।

(9)

सिनेमा समिति

उद्देश्य :

1. मूल्यांकन करके उच्च चारित्रिक मूल्यों, समृद्ध परम्परा तथा प्रतिष्ठित ऐतिहासिक कहानियों वाले सिनेमा की सिफारिश करना।
2. सस्ते, निम्न और गंदे सिनेमा का वर्जन करना।
3. रचनात्मक जन संदेश देने वाली फिल्मों के वीडियो टेप रखना।

(10)

ड्रामा समिति (स्थानीय)

उद्देश्य :

1. प्रतिष्ठित ड्रामा, विशेषकर नाट्य–संगीत को प्रोत्साहित करना। उत्तर भारत के लिये बाद में इनका हिन्दी में अनुवाद किया जा सकता है। बम्बई से शुरू हो कर यह पुणे, श्रीरामपुर, महाराष्ट्र के गांवों में सम्बन्धित सहजयोग केन्द्रों के माध्यम से जाना चाहिए। योगियों की उपस्थिति इन नाटकों में आवश्यक होनी चाहिए।
2. श्रेष्ठ ड्रामा का मूल्यांकन, उसकी सिफारिश तथा कलाकारों को प्रोत्साहन देना।

(11)

समाचार–पत्र समिति

उद्देश्य :

1. समाचार–पत्र, पाक्षिक पत्रिकाएं, पत्रिकाएं जो अच्छी तथा ठीक खबरें, धार्मिक लेख और मानवीय संयोजकताओं को छापती हों उनकी सिफारिश करना।
2. निम्नलिखित की लाभदायक सूचनाएं तथा आंकड़े इक्टठे करना :–
   मुद्राएं
   अर्थव्यवस्था
   कृषि उपज
   भौगोलिक तथ्य
   पर्यावरण सम्बन्धी तथ्य
   नये अन्वेषण तथा शोध सूचना
   आवश्यक अन्तरराष्ट्रीय स्थिति
3. सनसनीखेज पत्रकारिता की निन्दा करना।
4. सकारात्मक तथा ईमानदार पत्रकारों की पहचान करना।
5. ईमानदार पत्रकारों को विशेष पारितोषिक देना।

स्मरणीय : वार्षिक ईनाम दिया जाना चाहिए। हर मुख्य केन्द्र–अर्थात बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास इन प्रत्याशियों को राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय भाषाओं में पत्रकारिता के लिये ईनाम के लिये पहचानें। इस वार्षिक इनाम के लिये क्षेत्रीय मुख्य केन्द्र योगदान करें। दिल्ली राष्ट्रीय भाषा–हिन्दी या अंग्रेजी में इनाम के लिये धन दे। इनाम श्री माता जी के जन्म दिवस पर दिए जाने चाहिएं। वर्ष 1994 का इनाम श्री माता जी ने अरुण शौरी के लिये सुझाया है।

(12)

आडियो तथा वीडियो समिति (राष्ट्रीय)

उद्देश्य

1. श्री माता जी के सभी आडियो तथा वीडियो बनाये तथा बेचे जाने चाहिएं।
2. सहज संगीत के भी आडियो तथा वीडियो बनाये तथा बेचे जाने चाहिएं।

(13)

वित्तीय समिति

उद्देश्य :

1. सहज कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के लिये एकत्रित की गई धन राशि को निम्न प्रकार से देखभाल करें ––
   अ) व्यक्तिगत
   ब) सामूहिक
   स) श्री माता जी द्वारा दी गई

हर केन्द्र ऐसी समिति मनोनीत करे जो सामूहिक रुप से सारे वित्तीये लेखे–जोखे का निरीक्षण करे और उन्हें स्वीकृति दे।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

Printed at Bharati Printers, WZ-113, Shakurpur Village, Delhi-110034 Phone : 5413126, 5437741